

प्रथम भागमा मन्द हारी वादाल मध्य भागमा खण्डवृष्टि, अन्त्यम भागमा उचित वर्षा योग छ ।

भाद्रमा—यो मासमा परिस्थितिमा केहि परिवर्तन भएर सुव्यवस्था हुने दैवि प्रकोप, विषमताबाट अशान्ति, खाद्य स्थितिमा संकट अभाव महेगी अभाव को सामना रहने, पशुमा र कपडामा उत्तेजना, अन्य वस्तुमा साधारण घटा बढ रहने छ मेघ वर्षामा खण्ड वृष्टि जस्तो हुने पनि केहि अन्त्यमावर्षा योग ।

आश्विन—पाश्चात्य दक्षिण भागमा विद्रोह सम्भव, जनतामा अशान्ति खाद्यान्नको अभाव किराना माल केहि मन्दा कपडा र धातुमा तेजी अन्य यथास्थित रहने आद्य भागमा केहि वर्षा, बादल परमाण स्वच्छ हुने छ ।

कार्तिक—यसमा ग्रहस्थिति साधारण जस्तो हो आसनको भार लिने वली ग्रह नभएकाले स्वच्छन्दता जस्तो भएर सीधा-साधामा आघात, डाका चोरी, ठेराको उपद्रव, प्रायः सर्वत्र जस्तो रहने छ । परिस्थितिमा, केहि सुधार कपडा मा विशेष तेजी अन्य

साधारण, घटबढ रहने छ । मासको पूर्वभाग मा केहि मेघ बादल योग छ । पर भाग स्वच्छ रहने छ ।

मार्गमा—ग्रहस्थितिमा केहि सुधार भएकाले राष्ट्र-हरूमा केहि सुव्यवस्था जनतामा शान्त वातावरण खेती बारी या समयको फसलबाट कृषक वर्ग सन्तोसित रहने छन् । पाश्चात्यप्रदेश मा केहि अशान्ति रहला खाद्य स्थितिमा केहि सुधार धातुमा घटाबढी कपडामा तेजी अन्य यथास्थित रहनेछन् । मध्य भाग तिर मेघ बादलको योग ।

पौषमा—ग्रहस्थिति सामान्य जस्तो हो पूर्व इशान्य देशमा प्रजामा पीडा अन्यदेशमा सुव्यवस्था सर्वो तुपाराको विरोधता रविवालीमा हानि केहि रोग व्याधको भय धान्यादि खाद्य वस्तु मा समर्पता, अन्य सर्वमा केहि महर्पता रहने छ आद्यभाग मा मेघ बादल योग ।

माघमा—ग्रह स्थितिले केहि हुल चाल खलबल मनोमानि सीधा जनतामा आघात दैविक उल्का उत्पात मा दुर्घटना को भय रविवाली वाट कृषक वर्ग मा असन्तोष वेथि धान्यमा समर्पता, अन्य खाद्य वस्तु र

किरानामा उत्तेजना, अन्य यथास्थित मेघ बादल हुने पातको प्रकोप रहने छ ।

फाल्गुनमा—ग्रहस्थिति राम्रो थियो बार योगबाट राम्रो छैन, उल्का उत्पात रोग आधि व्याधि रोगमय अग्निमय सुनचाडि सुन कपडा र तुल्य धान्यमा केहि तेजि आउने रातो वस्तु किराना र द्विदल (मास-चनादि) मा केहि समर्पता अन्य साधारण सुरुमा र अन्त्यमा मेघ बादल योग ।

चैत्रमा—यसमा ग्रह स्थितिले मानुषिक स्थिति रीति राम्रो जस्तो हो रोग व्यधिमेष अग्नि आधि व्याधिको प्रकोप पशु पीडा योमासको विचार बाट आगामि वर्षमा केहि अनिष्ट सूचक छ धान्यादि खाद्य-वस्तु समता धातु र किरानामा महर्पता, अन्य यथास्थित रहने, अन्त्यभागमा केहि वर्षा बादल योग ।

मेषादि राशिको ग्रह गोचर फल

साढ़ेसाती शनि दशा यो वर्षारम्भमा सिंहराशिलाई अन्त्य, कन्याराशिलाई मध्य तुलाराशिलाई आद्य शनि साढ़ेसाती दशा छ ई राशि हुनेले शनिको जप पूजनादि गर्नु योग्य छ ।

श्रीशाके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ चैत्रशुक्लपक्षः (चौलाश्व) पा०-ति. १० पूफा. उफा. ह. ने. सं. ११०१ (अप्रैल ४ सन् १९८१) उत्तरायणं वसन्ततुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.  | घ. | प. | यो.  | घ. | प. | क.  | घ. | प. | गोता:  | चन्द्रा | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |   |  |  |  |  |
|----|-----|-----|----|----|-----|----|----|------|----|----|-----|----|----|--------|---------|-----|-----|-----|----|-----|---|--|--|--|--|
| १  | सो. | ९   | ६  | ३  | ति. | २  | १४ | धू.  | ४  | ३८ | ते. | ३५ | २६ | वाता   | क.      | ३१  | ३६  | ५   | ४१ | १३  | अवर्गः म.पु. विश्ववज्र पातनम् (खायुसल्लु)                   |  |  |  |  |
| २  | मं. | १०  | ४  | ४९ | अ.  | २  | ३८ | शू.  | ४  | ३८ | व.  | ३४ | ४९ | आतन्द  | २       | ३८  | ३१  | ४१  | ५  | ४०  | १४  | अश्विन्या १ मेवेजं: ३६। ४१ (वैशाख) संक्रान्तिः नव- a |  |  |  |
| ३  | नु. | ११  | ४  | ५० | म.  | ४  | १६ | वू.  | ५  | २५ | ब.  | ३५ | २८ | चर     | सि.     | ३१  | ४५  | ५   | ३९ | १५  | म. ३४। ४९ उ. ठिमोमध्येपुरेवालकुमारीयात्रा, म.पु. b          |  |  |  |  |
| ४  | वृ. | १२  | ६  | ७  | पु. | ७  | ११ | वू.  | ५  | ४० | को. | ३७ | २३ | गद     | २       | ३१  | ४२  | ५   | ३८ | १६  | म. ४। ५० या. कामदा ११ व्रतम् तिष्ये ३ राहुः अवगणे १ केतुः c |  |  |  |  |
| ५  | शू. | १३  | ८  | ३९ | उ.  | ११ | १६ | व्या | ५  | ४६ | ग.  | ४० | २८ | शुभ    | कं.     | ३१  | ५३  | ५   | ३७ | १७  | प्रदो मन्नम् म.पु. श्रीछा गणेश यात्रा d मेरेवुवः १। ३६६     |  |  |  |  |
| ६  | श.  | १४  | १२ | १७ | ह.  | १६ | २७ | ह.   | ५  | ३७ | भ.  | ४४ | ३२ | मृत्यु | ४       | १२  | ५   | ५   | ३७ | १८  | म.पु. मैरवमद्रकालो यात्रा। c १३ म.पु. ब्रह्मागोयात्रा।      |  |  |  |  |
| ७  | आ.  | १५  | १६ | ४८ | चि. | २२ | २४ | व.   | ५  | ७  | वा. | ४९ | १९ | पञ्च   | तु.     | ३२  | १   | ५   | ३६ | १९  | म. १२। १७ उ. ४४। ३२ या. पुर्णिमाव्रतम् मेवेमोमः ३२। ४९ d    |  |  |  |  |
|    |     |     |    |    |     |    |    |      |    |    |     |    |    |        |         |     |     |     |    |     | मन्वादिः हनुमज्जयन्तो, देवियात्रा, वैशाखस्तानारंभः c        |  |  |  |  |

| १ | सू. | मं. | व. | वृ. | शू. | श. | रा. |
|---|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|
| १ | ०   | ११  | ११ | ५   | ०   | ५  | ३   |
| २ | ०   | ११  | २१ | ११  | २   | १२ | १३  |
| ३ | ०   | ११  | २५ | १२  | ५   | २२ | २५  |
| ४ | ०   | ११  | ४७ | ५३  | ५३  | ३  | ८   |
| ५ | ३६  | ५८  | ४५ | १११ | ८   | ७४ | ४   |
| ६ | ४१  | ४४  | ५  | १३  | १९  | २१ | ४९  |

१ सू. १  
६ मं. वृ. १  
मं. मा. अ.  
वृ. मा. अ.  
वृ. व. उ.  
शू. मा. अ.पु.  
श. व. उ.

|          |           |
|----------|-----------|
| २        | म.वृ.१२   |
| ४        | १ सू. शू. |
| ४ रा.    | कं. १०    |
| ५        | ७         |
| ६ वृ. श. | ८         |

| मेपविपुवच्चक्रम्   | फलञ्चोभयोः  | तुलाविपुवच्चक्रम्  |
|--|---|--|
| क.रो.मू.आ.पु.ति.अ.<br>रे. अ. भ.<br>श्र.घ.श.पु.भा. उभा.<br>मू. पुषा. उपा.<br>वि. अ. ज्ये.<br>ह. चि. स्वा.<br>म. पू.फा. उफा. | शीर्ष-भूलाभः<br>मुखे-पाण्डित्यम्<br>हृदि-वनम्<br>दक्षकरे-स्त्रीलामः<br>वामकरे-सैक्षम्<br>दक्षपादे-भ्रमणम्<br>वामपादे-कष्टम् | पू.मा.उ.रे.अ.भ.क.रो.<br>श्र. घ. श.<br>अ.ज्ये.मू.पुषा.उपा.<br>चि. स्वा. वि.<br>पूफा. उफा. ह.<br>ति. अ. म.<br>मू. आ. पु. |

| जन्मलक्षितः फलम्                        | ७ स्त्रीसुखम्   | ६ अरिपराजयः  | ५ पुत्रसुखम्   | ४ मित्रसुखम्   | ३ कुटुम्बवृद्धिः | २ धनलामः     | १ देहसुखम्    | १२ दुःखदारिद्र्यः | ११ लाभ      | १० सुखम्     | ९ धर्मप्राप्तिः | ८ कष्टम्    |
|---|-----------------|--------------|----------------|----------------|------------------|--------------|---------------|-------------------|-------------|--------------|-----------------|-------------|
| ६।२५।४९।१८                              | मे.             | वृ.          | मि.            | कं.            | सिं.             | कं.          | तु.           | वृ.               | ध.          | मं.          | कु.             | मी.         |
| विशो-<br>तरी<br>अष्टो-<br>तरी           | १४<br>११<br>२११ | ८<br>५<br>११ | १४<br>२१४<br>८ | ११<br>११<br>११ | १४<br>२<br>११    | ८<br>५<br>११ | १४<br>२<br>११ | ५<br>५<br>५       | ५<br>५<br>५ | ११<br>२<br>५ | ५<br>५<br>५     | ५<br>५<br>५ |
| आय-व्यय चक्रम् अष्टोत्तरी विशोत्तरोयञ्च | मि.             | वृ.          | मि.            | कं.            | सिं.             | कं.          | तु.           | वृ.               | ध.          | मं.          | कु.             | मी.         |
| आय-<br>व्यय-<br>आय-<br>व्यय-            | १४<br>११<br>२११ | ८<br>५<br>११ | १४<br>२१४<br>८ | ११<br>११<br>११ | १४<br>२<br>११    | ८<br>५<br>११ | १४<br>२<br>११ | ५<br>५<br>५       | ५<br>५<br>५ | ११<br>२<br>५ | ५<br>५<br>५     | ५<br>५<br>५ |

चण्डे-  
श्रीमहाकाली, महालक्ष्मीयात्रा, टीका चण्डे-  
द्विरीमूलरथयात्रा रे. ४ भौमः १४  
c (लहृतिस्तानम्) बालाज्यु बाईलवारामेला।



श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ वैशाख कृष्णपक्षः (चौलागा) पा. ज्ये. श्र. उभा. अश्वि. भ. कृ. (अप्रैल ४ मई ५) उत्तरायण-वसन्तर्तुः

| ग. | वा. | ति.  | घ. | प.    | न. | घ. | प.    | यो. | घ. | प.  | क. | घ. | प.       | योगाः | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. | मं.मा.अ.व.मा.   | २२उ. | वृ.व.उ. | शु.मा. | १९उ.प. | श.व.उ. |
|----|-----|------|----|-------|----|----|-------|-----|----|-----|----|----|----------|-------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|---|------|---------|--------|--------|--------|
| ८  | सो. | १२१  | ५१ | स्वा  | २८ | ५१ | सि.   | ५९  | ३४ | तै. | ५४ | २७ | छत्र     | तु.   | ३२        | ५   | ५३५ | २०  |    |     | मं.मा.अ.व.मा.२२उ.वृ.व.उ.,शु.मा.१९उ.प.श.व.उ.                     |      |         |        |        |        |
| ९  | मं. | २२७  | ४  | वि.   | ३५ | २७ | व्य.  | ६०  | ०  | व.  | ५९ | २१ | श्रीवत्स | १८।४८ | ३२        | ९   | ५३४ | २१  |    |     | बृषेसायनांकः ११ विशाल नगरे वैष्णवी देवीयात्रा,a                 |      |         |        |        |        |
| १० | बु. | ३३१  | ५८ | अ.    | ४१ | ४१ | व्य.  | १   | ३  | व.  | ६० | ०  | सौम्य    | वृ.   | ३२        | १२  | ५३४ | २२  |    |     | भ. ५९।३१ उ. त्रिपुंकरः २७।४ या भरण्यां शुक्रः ५८                |      |         |        |        |        |
| ११ | बु. | ४३६  | १२ | ज्ये. | ४७ | ११ | व.    | २   | १० | व.  | ४  | ५  | काल      | ४७।११ | ३२        | १५  | ५३३ | २३  |    |     | भ. ३१।५८ याः (सकोयात) अश्विन्यां २ भौमः ५९।३५                   |      |         |        |        |        |
| १२ | शु. | ५३९  | २८ | मृ.   | ५१ | ४६ | प.    | २   | ३९ | कौ. | ७  | ५० | स्थिर    | घ.    | ३२        | १८  | ५३२ | २४  |    |     | पुनरुत्थायां ४ गुरुः २६   |      |         |        |        |        |
| १३ | श.  | ६४१  | ३३ | पु.   | ५५ | ११ | शि.   | २   | १९ | ग.  | १० | २० | मातङ्ग   | घ.    | ३२        | २१  | ५३२ | २५  |    |     | अल. पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथस्नानम्, (बुंगहव)                    |      |         |        |        |        |
| १४ | आ.  | ७४२  | २४ | उ.    | ५७ | २० | सि.   | ५८  | ३७ | म.  | ११ | २८ | अमृत     | १०।४३ | ३२        | २४  | ५३१ | २६  |    |     | भ. ४१।३३ उ. त्रिपु. ५५।११ उ. भरण्यां बुधः १५                    |      |         |        |        |        |
| १५ | सो. | ८४१  | ५७ | अ.    | ५८ | १५ | शु.   | ५५  | ३१ | वा. | १२ | १० | काण      | म.    | ३२        | २८  | ५३१ | २७  |    |     | भ. ११।५८ या. त्रिपु. ४२।२४ या रवि ७                             |      |         |        |        |        |
| १६ | मं. | ९४०  | १६ | घ.    | ५८ | ०  | शु.   | ५१  | १८ | तै. | ११ |    | उत्पात   | २८।७  | ३२        | ३१  | ५३० | २८  |    |     | अ. व्रतम् भरण्यां रविः १७ अश्विन्यां ३ भौमः २२                  |      |         |        |        |        |
| १७ | बु. | १०३७ | २८ | श.    | ५६ | ४१ | व.    | ४६  | १४ | व.  | ८  | ३४ | मानस     | कुं.  | ३२        | ३४  | ५२९ | २९  |    |     | व. प. प्रवृत्तिः २८।७ b४७ पश्चिमोदयः शुक्रः ९                   |      |         |        |        |        |
| १८ | वृ. | ११३३ | ४० | पु.   | ५४ | २८ | ऐ.    | ४०  | २३ | व.  | ५  |    | मुद्गर   | ४०।१  | ३२        | ३७  | ५२९ | ३०  |    |     | भ. ८।५२ उ. ३७।२८ या c (याताति चह्रपूजा) कृत्ति-d                |      |         |        |        |        |
| १९ | शु. | १२२९ | २  | उ.    | ५१ | २६ | वै.   | ३३  | ५१ | कौ. | १२ | ३४ | हवज      | मी.   | ३२        | ४०  | ५२८ | ३१  |    |     | वृषिनी ११ व्रतम् d कायां बुधः ३१ कृत्तिकायां शुक्रः ४६          |      |         |        |        |        |
| २० | श.  | १३२३ | ४६ | रै.   | ४७ | ५१ | वि.   | २६  | ५१ | म.  | ५० | ५३ | घाता     | ४७।५१ | ३२        | ४३  | ५२७ | ३२  |    |     | (मई ५ ता ३१) प्रदोष व्रतम् अश्विन्यां ४ भौमः b                  |      |         |        |        |        |
| २१ | आ.  | १४१८ | १  | अ.    | ४३ | ५४ | प्री. | १९  | २८ | च.  | ४५ | ०  | आनन्द    | मे.   | ३२        | ४७  | ५२७ | ३३  |    |     | भ. २३।४६ उ. ५०।५३ या. घ. पं. निवृत्तिः ४७।५१ c                  |      |         |        |        |        |
| २२ | सो. | ३०११ | ५९ | म.    | ३९ | ४६ | आ.    | ११  | ५० | कि. | ३८ | ५५ | चर       | ५३।४४ | ३२        | ५०  | ५२६ | ३४  |    |     | दर्शं श्राद्धम् f पश्चिमोदितो बुधः ९ वृषे बुधः २३।३८            |      |         |        |        |        |
|    |     |      |    |       |    |    |       |     |    |     |    |    |          |       |           |     |     |     |    |     | मातृतीर्थ स्नानम् सोमवती ३० स्नानदनादौ अमावस्या e               |      |         |        |        |        |
|    |     |      |    |       |    |    |       |     |    |     |    |    |          |       |           |     |     |     |    |     | e श्रीचांगुना रायेय श्रीछिन्नमस्ता श्रीकिलेश्वर मत्तरथयात्रा, f |      |         |        |        |        |

अयं छिक्का शकुनमाहः—छिक्का प्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वश्यामशुभं फलम् । आग्नेय्यांशोऽदुःखं स्यादरिष्टं दक्षिणे तथा ॥ नैऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे निष्ठमलम् । वायव्ये घनलाभस्तु चोत्तरे कलहस्तथा ॥ इशान्यां च शुभं ज्ञेयमात्मछिक्का महद्भयम् । उर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् । आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने । व. मांसे पृष्ठतश्चैव पदछिक्काश्च शुभावहाः ॥ गयाश्राद्धकालः—मीने मेघे स्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुके घटे ॥ दुर्लभं त्रिपुल्लोकेषु गयायां पिण्ड पातनम् ॥ पौषपूर्णिमातो माघ स्नानं तत्रमन्त्राः दुःखदरिद्रनाशाय श्री विष्णोस्तोषणाय च ।

| २   | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| १   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९   | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ११  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| २९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ३९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ४९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ५९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ६९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ७९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ८९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९०  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९१  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९२  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९३  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९४  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९५  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९६  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९७  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९८  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| ९९  | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |
| १०० | ०   | ०   | ०   | ५   | ०   | ५  |

श्री शाके १६०३ श्री संवत् २०३८ वैशाख शुक्ल पक्षः (वछलाश्व) पा० कृ. ति. म. १० ह. १६, १७ (मई ५) उत्तरायण-वसन्त-श्रीष्मर्तुः

| न. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.  | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगः     | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|------|----|----|-----|----|----|----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| २३ | मं. | १   | ५६ | ५१ | कृ.   | ३५ | ४० | सौ.  | ५६ | ६१ | वा. | ३२ | ५२ | गद       | वृ.       | ३२  | ५२  | ५२५ | ५  |     |
| २४ | बु. | ३   | ५४ | १७ | रो.   | ३१ | ४९ | अ.   | ४९ | १९ | तै. | २७ | ६  | शुभ      | वृ.       | ३२  | ५७  | ५२४ | ६  |     |
| २५ | बु. | ४   | ४९ | ९  | मृ.   | २८ | २५ | सु.  | ४२ | २७ | व.  | २१ | ४३ | मृत्यु   | ०१७       | ३३  | ०   | ५२४ | ७  |     |
| २६ | शु. | ५   | ४४ | ४४ | आ.    | २५ | ४० | घृ.  | ३६ | ९  | ब.  | १६ | ५७ | पद्म     | मि.       | ३३  | ३   | ५२३ | ८  |     |
| २७ | शु. | ६   | ४१ | ११ | पु.   | २३ | ४२ | शू.  | ३० | ३१ | कौ. | १२ | ५७ | छत्र     | ११११      | ३३  | ६   | ५२३ | ९  |     |
| २८ | आ.  | ७   | ३८ | ४१ | ति.   | २२ | ४३ | ग.   | २५ | ४३ | ग.  | ९  | ५६ | श्रीवत्स | क.        | ३३  | १०  | ५२२ | १० |     |
| २९ | सौ. | ८   | ३७ | २० | अ.    | २२ | ५२ | वृ.  | २१ | ५० | म.  | ८  | ०  | सौम्य    | २२१५२     | ३३  | १३  | ५२१ | ११ |     |
| ३० | मं. | ९   | ३७ | १३ | म.    | २४ | १२ | घृ.  | १८ | ५४ | वा. | ७  | १६ | काल      | सि.       | ३३  | १६  | ५२१ | १२ |     |
| ३१ | बु. | १०  | ३८ | २३ | पु.   | २६ | ४८ | व्या | १६ | ५८ | तै. | ७  | ४८ | स्थिर    | ४२१४५     | ३३  | १९  | ५२० | १३ |     |
| १  | वृ. | ११  | ४० | ४७ | उ.    | ३० | ३६ | ह.   | १६ | ४  | व.  | ९  | ३५ | मातंग    | कं.       | ३३  | २२  | ५२० | १४ |     |
| २  | शु. | १२  | ४४ | १७ | ह.    | ३५ | ३१ | व.   | १६ | २  | ब.  | १२ | ३२ | अमृत     | कं.       | ३३  | २५  | ५१९ | १५ |     |
| ३  | शु. | १३  | ४८ | ४१ | चि.   | ४१ | २१ | सि.  | १६ | ४८ | कौ. | १६ | २९ | काण      | ८१२६      | ३३  | २८  | ५१८ | १६ |     |
| ४  | आ.  | १४  | ५३ | ४० | स्वा. | ४७ | ४३ | व्य. | १८ | ५  | ग.  | २१ | १० | लुम्ब    | तु.       | ३३  | ३१  | ५१८ | १७ |     |
| ५  | सौ. | १५  | ५८ | ४७ | वि.   | ५४ | १८ | व.   | १९ | ४४ | म.  | २६ | १४ | मित्र    | ३७३९      | ३३  | ३४  | ५१७ | १८ |     |

p भरवयात्रा, भरण्या १ भौमः १६  
चन्द्रोदयः ल. पु. भ. श्रीमत्स्येन्द्रनाथ स्थारोहणम्, a  
अक्षयः ३ त्रेतायुगादि परशुराम जयंती धर्मघटादि b  
भ. २१४३ उ. ४९१० या. C रोहिण्यां बुधः १० रवि ७  
श्रीशङ्कराचार्यज., ५, मत्स्ये. रथया., ५ चण्डे. रथ. वै. स्नान y  
d (वृंगया) वृषेशुक्र २८१० त्रिपुष्करः ५१५१ उ. ३५१४० या.  
भ. ३८१४१ उ. गंगोत्पत्तिः ७ भरण्या २ भौमः ४३०  
भ. ८१० या. अ. व्रतम्, श्रीपशुपतर्दमनार्पणम्, कृत्ति-d  
श्रीसीता जयंती ९ अगस्त्यास्तः ५२ d कार्यांरविः ४  
रोहिण्यां शुक्रः ३६ b दानम् युगादिश्चाद्रम्, लू. मू. ४  
भ. ९१३५ उ. ४०१४७ याः वृषेऽर्कः ३११५५ (ज्येष्ठ) e  
भरण्या ३ भौमः १२५ समाप्तिः, मृगैः बुधः ५१ कर्मजयन्ती  
शनिप्रदोषव्रतम् e संक्रान्तिः, मोहिनी ११ व्रतम्  
भ. ५३१४० उ. श्रीनृसिंह जयन्ती १४ श्रीमहालक्ष्मी p  
भ. २६११४ या. चण्डी १५ पु. व्रतं, गौ. बुद्ध ज., (स्वा.) व. ५

| पु. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै. | ०   | ०   | १   | ५   | १  | ५   |
| २९  | २७  | १७  | १२  | ८   | ७  | १०  |
| ग.  | १२  | २०  | २३  | २९  | ३४ | ३१  |
| २   | ५   | ९   | १८  | ७   | २९ | ४४  |
| ३७  | ५७  | ४४  | ९८  | ४   | ७३ | ३३  |
| ४०  | ४९  | ११  | ८२  | ५४  | ०  | ११  |

| पु. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै. | १   | ०   | १   | ५   | १  | ५   |
| ५   | ३   | २२  | २३  | ८   | १६ | १०  |
| ग.  | ५५  | ३०  | १   | ५   | १० | १३  |
| २४  | ५१  | १०  | ३७  | १०  | ५३ | ५४  |
| ३७  | ५७  | ४३  | ८५  | ३   | ७३ | २३  |
| ५२  | ३८  | ५२  | १४  | ४   | ४७ | २५  |

|           |           |
|-----------|-----------|
| शु. बु. २ | १२        |
| ३         | १ सु. मं. |
| ४ रा.     | के. १०    |
| ५         | ७         |
| ६ वृ. श.  | ८         |

अथ वैशाख शुक्ल तृतीयायां कर्तव्य विचारः—यसमा स्नानदान जप तप जो गरिन्छ त्यसको अक्षय फल हुन्छ, यसैले अक्षय ३ नाम रहेको हो । पितृपण्ययुगादि आद्व यवाचन यवदान यव ( जौ ) को सत् व्यंजनादि उष्ण कालमा हितकर—छत्र उपानह दण्ड कमण्डलु कठपाद इत्यादि दान गर्नाले स्वर्ग मिल्दछ । वैशाखमासे नियमाः—वैशाखमा—एक भक्त वा, नक्त अयाचित कुनै नियमले भोजन, प्रातः स्नान दान पिपल दर्शन पूजन प्रदक्षिणा जला-पण, गौ सेवा गर्नाले पापनाश भौ कुलको उद्धार हुन्छ । स्नान मन्त्रः—मधु हन्तु प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् । निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नातमन्वहम् । वैशाखे मेघगे भानौ मुरारे मधुसूदन । प्रातः स्नानेन ये नाथ फलदो भव पापहन् ॥ वर्षाविचारः—आकाशमा रातो पहिलो देखिए वर्षा हुँदैन । बादल माथि बादल थपिए तुरंत वर्षा होला । पूर्वा पछुवा हावा एक साथ चल्थो अथवा कैले पूर्वा कैले पछुवा हावा चल्थो भने अवश्य वर्षा होला ।

१ सु. २, २३ शु. २  
मं. मा. अ., बु. मा. उ., वृ. व. उ.,  
शु. मा. उ. प., श. व. उ.



श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः (वछलागा) पा. १७ ज्ये. श्र. रे. कु. रो. (मई ५ जून ६) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः ।

| ग.     | वा. | ति. | घ. | प.    | न. | घ. | प.  | यो. | घ. | प.  | क. | घ. | प.     | योगाः चन्द्ररा. | वि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|--------|-----|-----|----|-------|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|--------|-----------------|-----|-----|-----|----|-----|
| ६ मं.  | १   | ६०  | ०  | अ.    | ६० | ०  | प.  | २१  | २१ | वा. | ३१ | १३ | वज्र   | वृ.             | ३३  | ३६  | ५   | १७ | १९  |
| ७ बु.  | १   | ३३  | ८  | अ.    | ०  | ३९ | शि. | २२  | ३७ | तै. | ३५ | ४४ | सौम्य  | वृ.             | ३३  | ३९  | ५   | १६ | २०  |
| ८ वृ.  | २   | ७   | ५० | ज्ये. | ६  | २२ | सि. | २३  | १८ | व.  | ३९ | २६ | काल    | ६               | २२  | ३३  | ४१  | ५  | १६  |
| ९ शु.  | ३   | ११  | ३  | मू.   | ११ | १० | सा. | २३  | १३ | व.  | ४२ | ४  | स्थिर  | घ.              | ३३  | ४४  | ५   | १५ | २२  |
| १० श.  | ४   | १३  | ५  | पू.   | १४ | ५३ | शु. | २२  | १४ | कौ. | ४३ | ३० | मातङ्ग | ३०              | १२९ | ३३  | ४६  | ५  | १५  |
| ११ आ.  | ५   | १३  | ५५ | उ.    | १७ | १८ | शु. | २०  | १५ | ग.  | ४३ | ४१ | अमृत   | म.              | ३३  | ४८  | ५   | १४ | २४  |
| १२ सो. | ६   | १३  | २८ | श्र.  | १८ | ३२ | ब.  | १७  | १६ | भ.  | ४२ | ३७ | सिद्धि | ४८              | १३१ | ३३  | ५०  | ५  | १४  |
| १३ मं. | ७   | ११  | ४७ | घ.    | १८ | ३१ | ऐ.  | १३  | १९ | बा. | ४० | २१ | उत्पात | कुं.            | ३३  | ५२  | ५   | १४ | २६  |
| १४ बु. | ८   | ८   | ५६ | श.    | १७ | २५ | वै. | ८   | २९ | तै. | ३७ | १  | मानस   | कुं.            | ३३  | ५३  | ५   | १४ | २७  |
| १५ वृ. | ९   | ५   | ७  | पू.   | १५ | २३ | वि. | ७   | ३३ | व.  | ३२ | ४६ | मुद्गर | ०               | १५३ | ३३  | ५४  | ५  | १३  |
| १६ श.  | १०  | ७   | ३७ | उ.    | १२ | ३२ | आ.  | ४९  | ३६ | ब.  | २७ | ४६ | हवज    | मी.             | ३३  | ५६  | ५   | १३ | २९  |
| १७ आ.  | १२  | ४९  | २० | रे.   | ९  | ५  | सौ. | ४२  | २१ | कौ. | २२ | १३ | घाता   | १               | १५  | ३३  | ५७  | ५  | १२  |
| १८ सो. | १३  | ४३  | १४ | अ.    | ५  | ११ | शो. | ३४  | ४८ | ग.  | १६ | १७ | आनन्द  | मे.             | ३३  | ५८  | ५   | १२ | ३१  |
| १९ मं. | १४  | ३७  | ४  | भ.    | ५  | ११ | अ.  | २७  | ८  | भ.  | १० | ९  | चर     | १               | ५११ | ३४  | ०   | ५  | १२  |
| २० बु. | १५  | ३१  | १  | रो.   | ५२ | ५९ | सु. | १९  | ३४ | च.  | ७  | ३  | मातङ्ग | वृ.             | ३४  | १   | ५   | १२ | २   |

भरण्या ४ भौमः ४६  
 दआर्द्रायांबुधः ४७  
 अ बुधः ९।६ मृगशुकः २८  
 भ. ३९।२६ उ. मिथुने सायनांकः १३  
 भ. ११।३ या.  
 दआर्द्रायांबुधः ५०  
 पुनरुफायां ४ वनिः ५५  
 रोहिण्यां रविः ५८ कृत्तिकायां १ भौमः १८ मिथुने  
 भ. १३।२८ उ. ४२।३७ या. घ. पं. प्रवृत्तिः ४८।३१  
 भौमाष्टमी व्रतम् द्विपु. ११।४७ या,  
 च शुक्रः ५५।४५ मार्गी गुरुः ३८  
 भ. ३२।४६ उ. वृषे भौमः ५२।५९  
 भ. ०।२६ या. अपरा ११ स्मार्तीनां व्रतम्, मिथुने  
 वैष्णवानां ११ व्रतम् घ. पं. निवृत्तिः ९।५.  
 भ. ४३।१४ उ. प्रदोष व्रतम् अभिजितिकेनुः २१ भौमः २९  
 भ. १०।९ या., (जून ६ ता. ३०) (सिटी चह्ने) d  
 वट सावित्री ३० व्रतम्, दशश्राद्धम्, कृत्तिकायां ३०

| ज्ये. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| १२    | १०  | २   | ५   | १   | ५  | ३   |
| १२    | १०  | २   | ५   | १   | ५  | ३   |
| २     | १७  | २   | २   | ५   | ४  | ०   |
| ३     | ५   | ४   | ३   | ६   | १  | ७   |
| ५     | २   | ४   | १   | २   | ४  | ३   |

|       |           |
|-------|-----------|
| बु. ३ | १ मं.     |
| रा. ४ | सू. शु. २ |
| ५     | ११        |
| वृ. ५ | ८         |
| ७     | ९         |
| ८     | १०        |

अथ चन्द्र दिग्ज्ञानम् मेघ सिंह धनुष पूर्व दिशि, वृषकन्या मकरेषु याम्य दिशि, मिथुन तुला कुम्भेषु पश्चिम दिशि, कर्क वृश्चिक मीनेषु उत्तर दिशि ।  
 फलं—सन्मुखे धन लाभः, दक्षिणे सुख सम्पत्तिः, वामचन्द्रे धनक्षयः, पृष्ठे कण्टम् चन्द्रवर्णज्ञानं तत्फलञ्च—मेघ सिंह वृश्चिकेषु रक्तं फलं कलह वृष कर्कतुलापु  
 श्वेतः फलं कार्यं सिद्धिः । मिथुन कन्या धनुष पीत फलं शुभाशुभम् । मकर कुम्भमीनेषु कृष्णं फलं कण्टमिति । अथ चन्द्र स्थित राशि वशात् चन्द्रबासतस्य  
 फलम्—मेघ वृष मिथुन वृश्चिकेषु स्वर्गं फलं सौख्यं, कर्क सिंह कुम्भमीनेषु मर्त्यं फलं कार्यं हानिः, कन्या तुला धनुमकरेषु पाताले फलं धनागमः । योगिनी-  
 वास जानं १।९ पूर्व २।१० तिथौ उत्तर ३।११ तिथौ आग्नेय ४।१२ तिथौ नैऋत्ये, ५।१३ दक्षिणे ६।१४ पश्चिमे ७।१५ वायव्ये ८।३० तिथौ एशान्ये ।

१५ मं. २, ११ बु. ३, १६ शु. ३  
 मं. मा. अ., बु. मा. उ., वृ. १६ मा.  
 उ., शु. मा. उ. प., श. व. उ.

| र. व. ति. घ. प. न. | घ. प. यो. घ. प. क. घ. प. | योगा: चन्द्ररा. दि. मा. सू. उ. ता.                |
|--------------------|--------------------------|---|
| २१ बु.             | १२५ १६ म.                | ४९ २६ घ. १२ १६ वा. ५२ ४० अमृत २१ १२ ३४ ३ ५ १२ ३   |
| २२ वृ.             | २ २० ४ आ.                | ४६ ३० शु. ४७ ४८ काण मि. ३४ ४ ५ ११ ४               |
| २३ से.             | ३ १५ २२ पु.              | ४४ १९ वृ. ५३ १० व. ४३ ४२ लुम्ब २९ ५२ ३४ ५ ५ ११ ५  |
| २४ श.              | ४ ११ ५२ ति.              | ४३ ५ ध्रु. ४८ १३ व. ४० ३३ मित्र क. ३४ ६ ५ ११ ६    |
| २५ आ.              | ५ ९ १४ अ.                | ४२ ५८ व्या ४४ १० कौ. ३८ २९ वज्र ४२ ५८ ३४ ७ ५ ११ ७ |
| २६ सो.             | ६ ७ ७५ म.                | ४३ ५९ ह. ४१ ३ ग. ३७ ३८ ध्वाक्ष सि. ३४ ८ ५ १० ८    |
| २७ मं.             | ७ ७ ३१ पु.               | ४६ १६ व. ३८ ५७ भ. ३८ २ घूम्र सि. ३४ १० ५ १० ९     |
| २८ बु.             | ८ ३३ उ.                  | ४९ ४७ सि. ३७ ५१ वा. ३९ ४१ वदं २ १९ ३४ ११ ५ १० १०  |
| २९ वृ.             | ९ १० ५० ह.               | ५४ २६ व्य. ३७ ४१ तै. ४२ ३१ रक्ष क. ३४ १३ ५ १० ११  |
| ३० शु.             | १० १४ १२ चि.             | ६० ० व. ३८ १९ व. ४६ २१ मुसल २७ १६ ३४ १५ ५ ९ १२    |
| ३१ श.              | ११ १८ ३० चि.             | ० ६ प. ३९ ३४ व. ५० ५६ काण तु. ३४ १७ ५ ९ १३        |
| ३२ आ.              | १२ २३ २२ स्वा            | ६२० मि. ४१ १० कौ. ५५ ५४ लुम्ब ५६ १५ ३४ १८ ५ ८ १४  |
| १ सो.              | १३ २८ २६ वि.             | १२ ५४ सि. ४२ ५१ ग. ६० ० मित्र वृ. ३४ १९ ५ ८ १५    |
| २ मं.              | १४ ३३ १४ अ.              | १९ २० सा. ४४ १५ ग. ० ५० वज्र वृ. ३४ २१ ५ ८ १६     |
| ३ व.               | १५ ३७ २६ ज्ये.           | २५ १२ ग. ४५ ७ भ. ५२० ध्वाक्ष २५ १२ ३४ २२ ५ ८ १७   |

| १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १०  |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १०  |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २०  |
| २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३०  |
| ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४०  |
| ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५०  |
| ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६०  |
| ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७०  |
| ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८०  |
| ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९०  |
| ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |

|   |   |   |
|---|---|---|
| ४ | ९ | २ |
| ३ | ५ | ७ |
| ८ | ६ | १ |

अथ दशहरा स्नानम्—यो प्रातःपदादेरिह १० मी सम्म दशहरा हुन्छ, यसमा प्रतिदिन तदशक्तौ दशमीमा गङ्गा नदी वा जलाशयमा स्नान गरी गंगापूजागर्त, तन्मन्त्रः—तमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै दक्षायै अमृत्यै विश्वरूपिण्यै ते तमोनमः । अथ नववधूपति-गृहनिवास विचार-विवाह भएपछि पतिगृहमा रहँदा प्रथम-आपाहुमा शाशु, ज्येष्ठमा जेठाशु, पीपमा शशुर, सलमासमा-पति, क्षयमासमा आफैलाई कष्ट गर्दछ, चैत्रमा—माईतमा नवस्तु पितालाई अनिष्ट हुन्छ । अथस्वप्नशांति—नराश्रो स्वप्ना देखियो भने भरसक फेरी निदाउनु, उठेर जलाशयमा गएर स्नान गर्नु, विद्वान्सज्जनलाई सुनाई आशीर्वाद लिनु, पीपल गौको दर्शन यथाशक्य गो सुवर्ण द्रव्य दान स्वप्नाध्याय सुख वा पाठ गर्नु, अशुभ फलनाश हुन्छ ।



श्री शाके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ आषाढ कृष्णपक्ष (तछलागा) उषा. अभि. उभा. रो. मू. आ. (जून ६ जुलाई ७) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः

| ग.    | वा.  | ति. | घ.   | प. | न. | च.    | प. | यो. | घ.  | प. | क. | घ.        | प.    | योगा: | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सु. | उ. | ता. |
|-------|------|-----|------|----|----|-------|----|-----|-----|----|----|-----------|-------|-------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| ४वृ.  | १४०  | ३९  | मू.  | ३० | ११ | शु.   | ४५ | १३  | वा. | १  | २  | घृ        | २३    | ५     | ८         | १८  | १८  | ५   | ७  | १८  |
| ५शु.  | २४२  | ४३  | पु.  | ३४ | १० | ब्र.  | ४४ | २७  | तै. | ११ | ४० | प्रवर्द्ध | ४९१५० | ३४    | २५        | ५   | ७   | १९  | १९ | १९  |
| ६श.   | ३४३  | ३३  | उ.   | ३६ | ५२ | ऐ.    | ४२ | ४१  | व.  | १३ | ७  | रक्ष      | म.    | ३४    | २७        | ५   | ७   | २०  | २० | २०  |
| ७आ.   | ४४३  | ६   | श्व. | ३८ | २१ | वै.   | ३९ | ५५  | व.  | १३ | २० | गद        | म.    | ३४    | २७        | ५   | ७   | २१  | २१ | २१  |
| ८सो.  | ५४१  | २६  | घ.   | ३८ | ३५ | वि.   | ३६ | ११  | को. | १२ | १६ | शुभ       | ८१२८  | ३४    | २७        | ५   | ७   | २२  | २२ | २२  |
| ९मं.  | ६३८  | ३७  | श.   | ३७ | ४३ | प्री. | ३१ | ३२  | ग.  | १० | १  | मृत्यु    | कुं.  | ३४    | २७        | ५   | ७   | २३  | २३ | २३  |
| १०वृ. | ७३४  | ४९  | पु.  | ३५ | ५१ | आ.    | २६ | १   | म.  | ६  | ४२ | पद्म      | २१११९ | ३४    | २६        | ५   | ७   | २४  | २४ | २४  |
| ११वृ. | ८३०  | ९   | उ.   | ३३ | ८  | सो.   | १९ | ४९  | व.  | ४  | ३६ | छत्र      | मी.   | ३४    | २५        | ५   | ७   | २५  | २५ | २५  |
| १२शु. | ९२४  | ४९  | रे.  | २९ | ४७ | शो.   | १३ | ३   | व.  | ५१ | ५३ | श्रीवत्स  | २११४७ | ३४    | २३        | ५   | ७   | २६  | २६ | २६  |
| १३श.  | १०१८ | ५९  | अ.   | २५ | ५७ | अ.    | ४८ | ३६  | व.  | ४५ | ५६ | सीम्य     | मे.   | ३४    | २२        | ५   | ७   | २७  | २७ | २७  |
| १४आ.  | १११२ | ५३  | म.   | २१ | ४९ | घृ.   | ५० | ४२  | को. | ४९ | ४६ | काल       | ३५१४६ | ३४    | २१        | ५   | ७   | २८  | २८ | २८  |
| १५सो. | १२६३ | ९   | क्र. | १७ | ३८ | शू.   | ४३ | ५   | ग.  | ३३ | ३६ | स्थिर     | वृ.   | ३४    | १९        | ५   | ७   | २९  | २९ | २९  |
| १६मं. | १३७७ | ३३  | रो.  | १३ | ३९ | ग.    | ३५ | ४१  | म.  | २७ | ३९ | मातङ्ग    | ४११४९ | ३४    | १८        | ५   | ७   | ३०  | ३० | ३०  |
| १७वृ. | ३०४९ | २८  | मू.  | ९  | ५९ | वृ.   | २८ | ४२  | च.  | २२ | ७  | अमृत      | मि.   | ३४    | १७        | ५   | ७   | ३१  | ३१ | ३१  |

पुनर्वृषे बुधः ४५१४  
 हनिः ३८ कर्कटे सायनांकः ४३  
 अ. १३७ उ. ४३१३३ याः  
 आर्द्रायां रविः ५९० रोहिण्यां ३ भौमः १० हस्तार्धे १६  
 घ. पं. प्रवृत्तिः ८१२८ रोहिण्यां ४ भौमः ५४  
 अ. ३८१३७ उ. त्रिपु. ३८१३७ उ. कर्कटे शुक्रः ३६१३६  
 अ. ६४२ या. पूर्वोदितो बुधः ४  
 अष्टमी व्रतम् देवपत्तने त्रिशूल यात्रा, भलभलाष्टमी  
 अ. ५१५३ उ. घ. प. नि. : २९१४७ तिष्येयुक्रः २३  
 अ. १८१५९ या. (न ववादिसी) मार्गी बुधः १७  
 योगिनी ११ व्रतम्, त्रिपु. २११४९ उ.  
 सोम प्रदोष व्रतम्, अमृगशीर्षे १ भौमः ४१  
 अ. ०३३ उ. २७१३९ या., (दिलाचहे पूजा)  
 अमावास्या दर्शश्राद्धम्, (जुलाई ७ ता. ३१)

| ११ | सू. | मं. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ. | २   | १   | १   | ५   | २  | ५   |
| ८  | ७   | १७  | २७  | ८   | २८ | १०  |
| ग. | १७  | ४१  | १८  | ३५  | ४८ | १४  |
| २  | १   | ५९  | ४८  | ११  | ४७ | २७  |
| ३८ | ५६  | ४२  | १७  | ४   | ७३ | १   |
| ४५ | ९१  | १७  | १८  | १२  | ०  | २८  |

| १२ | सू. | मं. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ. | २   | १   | १   | ५   | ३  | ५   |
| १५ | १३  | २२  | २६  | ९   | ७  | १०  |
| ग. | ५५  | ३६  | ५८  | ९   | १६ | १४  |
| २  | १२  | ७   | १४  | ४१  | २६ | ४९  |
| ३७ | ५६  | ४१  | २४  | ५   | ७२ | २   |
| ५६ | ५५  | ५०  | ४४  | ५   | ५६ | १०  |

| ४ रा.    | मं. वृ. २ |
|----------|-----------|
| ५        | सु. शु. ३ |
| ६ वृ. श. | १२        |
| ७        | ९         |
| ८        | १० के.    |

अथामावास्याजनन फल-अमावास्यामा जन्मेका बालकले पिता मातालाई अनिष्टर दांपत्य जीवनमा पनि बाधां गर्छ-कन्याको निमित्त विशेष अनिष्ट  
 उक्तञ्च-अमावास्याद्वभा कन्या पति हन्त्री यथा भवेत् अथ ह्यमायां निशि भोजन निशेधः—दशजन्मानि गृहश्च द्वादशो जन्म शूकरः । सप्तजन्मा-  
 निश्चानश्च ह्यमायां निशि भोजनात् ॥ जीवित पितृ मातृ हुनेले वार्न पदेन ॥ अथ नवीन वधू पतिगृह निवास फल-विवाह भएको पहिला आषाढमा पति  
 गृहमावसे शाशुनाशपौषमा श्वशुर नाश, मलमासमा पति नाश, क्षयमासमा स्वयं नाश, ज्येष्ठमा जेठाज्यूनाश गर्छ न बस्नु चैत्रमा पितृ गृहमा न बस्नु पिता  
 लाई अनिष्ट हुन्छ । पिरीनेको अभाव भए वस्न हुन्छ । शयनगर्वा शिरफल-पूर्वधनम् दक्षिणे आयवृद्धि पश्चिमे-प्रबला चिन्ता उत्तरे हानिः कष्टमिति ॥

४ वृ. २, ९ शु. ४, मं. मा. उ.  
 वृ. १३ मा. १० उ., वृ. मा. उ. शु.  
 मा. उ. प. श. मा. उ.

श्रीशके १९०३ श्री संवत् २०३८ आषाढ शुक्लपक्षः (दिल्लथ्व) पा.आ.ति.ह.ज्ये.मू.उषा. अमि. (जुलाई ७) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः-दक्षि-वर्षर्तुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.   | घ. | प. | योगः   | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |   |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|------|----|----|--------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|---|
| १८ | वृ. | १   | ४४ | ४९ | आ.    | ६  | ५१ | ध्रु. | २२ | १० | कि.  | १७ | ८  | काण    | ५०१       | ४   | ३४  | १५  | ५  | ९   | २ |
| १९ | शु. | २   | ४१ | ३८ | पु.   | ४  | २८ | व्या  | १६ | १७ | वा.  | १२ | ५६ | लुम्ब  | क.        | ३४  | १४  | ५   | ९  | ३   |   |
| २० | मं. | ३   | ३८ | १७ | ति.   | ३  | ०  | ह.    | ११ | ११ | तै.  | ९  | ४० | मित्र  | क.        | ३४  | १२  | ५   | १० | ४   |   |
| २१ | आ.  | ४   | ३६ | ४० | अ.    | २  | ३६ | व.    | ६  | ५६ | ब.   | ७  | २८ | वज्र   | २१३       | ६   | ३४  | ११  | ५  | १०  |   |
| २२ | मो. | ५   | ३६ | १७ | म.    | ३  | १८ | सि.   | ३  | ३८ | व.   | ६  | २८ | ध्वांश | सि.       | ३४  | १०  | ५   | १० | ६   |   |
| २३ | मं. | ६   | ३७ | १० | पु.   | ५  | १७ | व्य.  | १  | २१ | को.  | ६  | ४३ | धूम्र  | २१५       | ३४  | ९   | ५   | १० | ७   |   |
| २४ | वृ. | ७   | ३९ | १८ | उ.    | ८  | ३१ | व.    | ५  | ४४ | ग.   | ८  | १४ | वर्ध   | कं.       | ३४  | ८   | ५   | १० | ८   |   |
| २५ | शु. | ८   | ४२ | ३४ | ह.    | १२ | ५४ | शि.   | ६  | ०  | भा.  | १० | ५६ | रक्ष   | ४५१       | ३७  | ३४  | ७   | ५  | ११  |   |
| २६ | मं. | ९   | ४६ | ४७ | चि.   | १८ | २० | शि.   | ०  | १३ | वा.  | १४ | ४० | सुसल   | तु.       | ३४  | ६   | ५   | ११ | १०  |   |
| २७ | आ.  | १०  | ५१ | ३७ | स्वा  | २४ | २६ | सि.   | १  | २१ | तै.  | १९ | १२ | सिद्धि | तु.       | ३४  | ५   | ५   | ११ | ११  |   |
| २८ | मो. | ११  | ५६ | ३९ | वि.   | ३० | ५८ | सा.   | २  | ५३ | ब.   | २४ | ८  | उत्पात | १४१       | २०  | ३४  | ४   | ५  | ११  |   |
| २९ | मं. | १२  | ६० | ०  | अ.    | ३७ | २६ | शु.   | ४  | ३६ | व.   | २९ | ४  | मानस   | वृ.       | ३४  | ३   | ५   | ११ | १२  |   |
| ३० | वृ. | १३  | ६४ | ३० | ज्ये. | ४३ | २६ | शु.   | ६  | ०  | को.  | ३३ | ३६ | मुद्गर | ४३१       | २६  | ३४  | २   | ५  | १२  |   |
| ३१ | शु. | १४  | ६९ | ३९ | मू.   | ४८ | ३६ | त्र.  | ६  | ५८ | ग.   | ३७ | २२ | ध्वज   | घ.        | ३४  | ०   | ५   | १२ | १३  |   |
| ३२ | मं. | १५  | ७३ | ४९ | ऐ.    | ७  | ११ | म.    | ४० | ५  | घाता | घ. | ३३ | ५८     | ५         | १३  | १६  | ५   | १२ | १४  |   |
| ३३ | आ.  | १६  | ७८ | ५९ | उ.    | ५५ | ४८ | वै.   | ६  | ३३ | वा.  | ४१ | ३७ | आनन्द  | ८१३       | ४३  | ५६  | ५   | १३ | १५  |   |

b संक्रान्ति पू. व्रतं, दक्षिणारंभः लूतनक्षेपणम्, c चन्द्रोदयः श्रोजगन्नाथ रथयात्रा, c कण्ठारकपूजा, पुनर्मिथुने बुधः ५४१७  
 म. ७१२८ उ. ३६१४० या. मृगशीर्षे २ भौमः ३१  
 पुनर्वसौ रविः ३ ह सूर्यपूजा हस्तर्षे १ गुरुः १  
 त्रिपुष्करः ३७१० उ अश्लेषायां शुकः २५ ।  
 म. ३९११८ उ. देवपत्तने श्रीगङ्गामाई रथयात्रा, ह  
 म. १०१५६ या. अष्टमोव्रतम् a व्रतम् चातुर्मास्यव्रतारंभः  
 मृगशीर्षे ३ मिथुने भौमः २१३१  
 आर्द्रायां बुधः २७ मन्वादिः  
 म. २४१८ उ. ५६१३९ या. हरिश्चयनी ११ स्मातर्नां  
 वैष्णवानां ११ व्रतं, तुलसीरोपणम् n (दिलापुत्ती)  
 प्रदोष व्रतम्, ( तुलसी पीए )  
 मृगशीर्षे ४ भौमः १०  
 म. ९११ उ. ४०१५ या. कर्कटेशकः ३५११६ (श्रावण) b  
 गुरुपूजा व्यासपूजा १५, दक्षिणमूर्ति पूजा, मन्वादिः n

| १३ | सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | शु. | शु. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| आ. | २   | १   | २   | ५   | ३   | ५   | ३   | २९  |
| ग. | ३   | २   | ७   | ४   | ९   | १५  | १०  | ५७  |
| २१ | १   | २०  | २६  | ४४  | १७  | ५७  |     |     |
| ३७ | ५   | ४१  | ५९  | ६७  | २   | ३   |     |     |
| ४९ | ५   | ५५  | ५३  | १०  | ५४  | ५०  | ११  |     |

|        |         |     |
|--------|---------|-----|
| रा.शु. | ४       | म.२ |
| ५      | सू.बु.३ | १   |
| ६      | वृ.श.   | १२  |
| ७      | ९       | ११  |
| ८      | १०      | के. |

अथ चातुर्मास्यव्रतारंभः-विधिवत्सकल्प पूर्वकं कृत्वा प्राथयेत् । प्रार्थना मन्त्रः-इमं करिष्य नियम निविघ्न कुरु मेऽच्युत । इदं व्रत मया देवगृहितं पुरतस्तव निविघ्न सिद्धिमायान्तु प्रसादात्तवकेशव । गृहतेऽस्मिन्वते देव पंचत्वं यदि मे भवेत् । तदा भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादाज्जनादृतं । चातुर्मास्येऽप्यपदार्थाः-श्रावणशकं भाद्रपदेऽर्घ्य आश्विने दुग्धं कार्तिके त्रिवर्लं ( मासादि ) चातुर्मास्येऽप्युगुड मांस तैल कलत्थ मूलकं कृष्णाण्ड क्षीरकर्म खट्वा शयनं वदरोफलम् एतानि परिर्जयेत् ॥

१ सू. ४ २६ मं. ३ २० वृ. ३  
 मं. मा. उ. वृ. मा. उ. वृ. मा.  
 उ. श. मा. उ. प. श. मा. उ.



श्रीशके १६०३ श्रोसंवत् २०३८ श्रावण कृष्णपक्षः (दिल्लागा) पा. उभा, मृ. रो. आ. ति. (जुलाई ७) दक्षिणायन-वर्षर्तुः

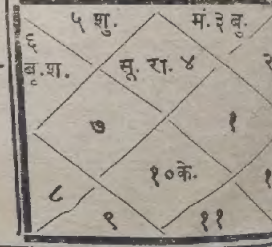
| ग.     | वा. | ति. | घ. | प. | न.  | घ.  | प. | यो.   | घ.   | प.  | क.  | ख.  | प. | योगः   | चन्द्ररा. | दि.    | मा. | सू. | उ  | ता |    |    |
|--------|-----|-----|----|----|-----|-----|----|-------|------|-----|-----|-----|----|--------|-----------|--------|-----|-----|----|----|----|----|
| ३      | श.  | १   | १२ | ५  | श.  | ५७  | २९ | वि.   | ४    | ५८  | तै. | ४१  | ५४ | चर     | म.        | ३३     | ५४  | ५   | १३ | १८ |    |    |
| ४      | आ.  | २   | ११ | ४  | घ.  | ५७  | ५९ | प्री. | ५    | ४१  | व.  | ४०  | ५४ | मातङ्ग | २७        | ४४     | ३३  | ५३  | ५  | १३ | १९ |    |
| प्र. ५ | सी. | ३   | १० | ६  | श.  | ५७  | २२ | सी.   | ५    | ४१  | ब.  | ३८  | ४४ | अमृत   | कुं.      | ३३     | ५१  | ५   | १४ | २० |    |    |
| ६      | मं. | ४   | ७  | २२ | पू. | ५५  | ४० | शो.   | ४८   | ५२  | कौ. | ३५  | २८ | काण    | ४१        | ५५     | ३३  | ४९  | ५  | १४ | २१ |    |
| ७      | बु. | ५   | ६  | ३३ | उ.  | ५३  | ८  | अ.    | ४२   | ४५  | ग.  | ३१  | १६ | लुम्ब  | मी.       | ३३     | ४६  | ५   | १५ | २२ |    |    |
| ८      | वृ. | ७   | ५  | ३४ | रे. | ४९  | ५३ | सु.   | ३६   | ३   | म.  | २६  | १९ | मित्र  | ४१        | ५३     | ३३  | ४४  | ५  | १६ | २३ |    |
| ९      | शु. | ८   | ४  | ५  | अ.  | ४६  | ८  | घ.    | २८   | ५३  | वा. | २०  | ४६ | वज्र   | मे.       | ३३     | ४२  | ५   | १६ | २४ |    |    |
| १०     | श.  | ९   | ४  | १  | ४   | म.  | ४२ | २     | शू.  | २१  | २५  | तै. | १४ | ४९     | ध्वाक्ष   | ५५     | ५९  | ३३  | ३९ | ५  | १६ | २५ |
| ११     | आ.  | १०  | ३  | ५  | ३   | कृ. | ३७ | ५०    | गं.  | १३  | ४६  | व.  | ८  | ३८     | घृष्ण     | वृ.    | ३३  | ३७  | ५  | १७ | २६ |    |
| १२     | सी. | ११  | २  | ९  | २   | रो. | ३३ | ४     | ५    | वृ. | ५   | ७   | ब. | ५      | ३६        | वर्द्ध | वृ. | ३३  | ३४ | ५  | १८ | २७ |
| १३     | मं. | १२  | २  | ३  | ३   | मृ. | २९ | ५९    | व्या | ५१  | ३३  | ग.  | ५० | ५६     | रक्ष      | १५     | २३  | ३१  | ५  | १८ | २८ |    |
| १४     | बु. | १३  | १  | ८  | १   | आ.  | २६ | ४     | १    | ह.  | ४४  | ५३  | म. | ४५     | ५६        | मुसल   | मि. | ३३  | २८ | ५  | १८ | २९ |
| १५     | वृ. | १४  | १  | ३  | ३   | घु. | २४ | ६     | व.   | ३८  | ५०  | च.  | ४१ | ४१     | सिद्धि    | १४     | ४५  | ३३  | २५ | ५  | १९ | ३० |
| १६     | शु. | ३०  | २  | ४  | ६   | ति. | २२ | २४    | सि.  | ३३  | ३१  | कि. | ३८ | २१     | उत्पात    | क.     | ३३  | २२  | ५  | २० | ३१ |    |

सिंहे शुक्रः ३०।४१ त्रिपुष्करः ५७।२९ उ.  
 म. ४०।५४ उ. द्विपुष्करः ११।४३ या. घ. प. २  
 म. १०।६ या. तिष्ये रविः ६ आर्द्रायां १ मीमः ५७  
 मंगलः ४८ (गठामुगच हे पूजा) आर्द्रायां ३ मीमः ५७  
 म. ५८।५८ उ. अप्रवृत्तिः २७।४४  
 म. २६।१९ या. घ. प. निवृत्तिः ४९।५३ सिंहे  
 अष्टमोदतम् पुनर्वसौ बुधः ३८  
 आर्द्रायां २ मीमः ३ सायनाङ्कः २१  
 म. ८।३८ उ. ३५।३१ या. कर्कटे बुधः ३९।७  
 कामिका ११ व्रतम् पूर्वास्तौ बुधः २९  
 प्रदोष व्रतम् द्विपुष्करः २३।३६ या. तिष्ये बुधः ३५  
 म. १८।१६ व. ४५।५६ या घण्टा कर्ण १४८  
 दशश्राद्धम् पूजायां शुक्रः ३६  
 स्नानदानादौ अमावास्याः सूर्यग्रहणं खण्डयासः

| श्रा. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|-------|-----|-----|-----|-----|----|
| ३     | ३   | २   | २   | ५   | ४  |
| ५     | ३   | ७   | १९  | ११  | २१ |
| ७     | ५   | २   | ५९  | ३८  | ३२ |
| ९     | ६   | २   | ५६  | ५३  | ५४ |
| ११    | ५   | ७   | ९६  | ८   | ७२ |
| १३    | ४   | २   | १९  | २२  | १८ |

| श्रा. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. |
|-------|-----|-----|-----|-----|----|
| ३     | ३   | २   | ३   | ५   | ४  |
| ५     | ३   | ७   | १९  | ११  | २१ |
| ७     | ५   | २   | ५९  | ३८  | ३२ |
| ९     | ६   | २   | ५६  | ५३  | ५४ |
| ११    | ५   | ७   | ९६  | ८   | ७२ |
| १३    | ४   | २   | १९  | २२  | १८ |

३ शु. ५, ११ बु. ४  
 मं. मा. उ. बु. मा. उ. १३ अ  
 वृ. मा. उ. शु. मा. उ. प. मा. उ.



आय दुःस्वप्न शान्तिः—नराश्रो स्वप्न देखेपछि भरसक निदाउनु प्रातः उठेर नदीवा जलाशयमा स्नानगरी ब्राह्मण, सञ्जनसंग आशीर्वादलिनु, पीपलगीको दर्शनगरी स्वप्नाध्यायसुन्नुवा पाठगर्न गोसुवर्णद्रव्यदानगर्नु अशुभ फलनाश हुन्छ । काकस्पर्श फलः काका भने दारिद्र्य मरद कुनै होला, कटिमा छोये ठुलोमय, अरिष्ट होला, स्त्रीको शीरमाछोयो भने पतिवापुत्रको मरण रुखमनीचीजको संयोगले छोये दोष हुदैन । काक मैथुन देखिए भने ६ मास पहीना मित्र अनिष्ट हुन्छ । काकशान्तीगर्न योग्य छ, संक्रान्ति लूतो फाल्ते मन्त्र, कण्डारक रात्रिचर लूतादि भयनाशन । उल्का मिसां प्रक्षिपामि मास्तु लूताभयमम । कीणगृहयुद्ध शीयभक्तममम । सरलेन्धन संभूतं ममारिष्टं विनाशय ।

श्रीशाक १९०३ श्री संवत् २०३८ आषाढ शुक्ल पक्षः (गुलाश्व) पा. ह. अनु. ज्ये. मू. उषा. अभि. २४ (अगस्त ८) दक्षिणायनं वर्षतुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | ध. | प. | यो.   | घ. | प. | क.   | घ. | प. | योगा.  | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |    |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|------|----|----|--------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|----|
| १७ | श.  | १   | ६  | ५७ | अ.    | २१ | ४४ | व्य.  | २९ | ५  | वा.  | ३६ | ६  | मानस   | २१        | ४४  | ३३  | १९  | ५  | २०  | १  |
| १८ | आ.  | २   | ५  | १५ | म.    | २२ | ८  | व.    | २५ | ३३ | तै.  | ३५ | १  | मुद्गर | सि.       | ३३  | १७  | ५   | २१ | २   |    |
| १९ | सा. | ३   | ४  | ४८ | पु.   | २३ | ५० | प.    | २३ | २  | व.   | ३५ | १२ | ध्वज   | ३९        | ३४  | ३३  | १५  | ५  | २१  | ३  |
| २० | म.  | ४   | ५  | ३७ | उ.    | २६ | ४६ | शि.   | २१ | ३१ | ब.   | ३६ | ३९ | धाता   | कं.       | ३३  | १३  | ५   | २१ | ४   |    |
| २१ | बु. | ५   | ७  | ४१ | ह.    | ३० | ५२ | सि.   | २० | ५९ | को.  | ३९ | १६ | आनन्द  | क.        | ३३  | १०  | ५   | २२ | ५   |    |
| २२ | वृ. | ६   | १० | ५२ | चि.   | ३६ | ४  | सा.   | २१ | १६ | ग.   | ४२ | ५७ | चर     | ३१        | २८  | ३३  | ६   | ५  | २३  | ६  |
| २३ | शु. | ७   | १५ | २  | स्वा  | ४२ | १  | शु.   | २२ | १५ | म.   | ४७ | २६ | गद     | तु.       | ३३  | २   | ५   | २४ | ७   |    |
| २४ | भा. | ८   | १९ | ०  | वि.   | ४८ | २७ | शु.   | २३ | ३९ | वा.  | ५२ | २२ | शुभ    | ३१        | ५०  | ३२  | ५८  | ५  | २४  | ८  |
| २५ | आ.  | ९   | २४ | ५४ | अ.    | ५४ | ५८ | ब.    | २५ | १९ | तै.  | ५७ | २० | मृत्यु | वृ.       | ३२  | ५४  | ५   | २५ | ९   |    |
| २६ | सा. | १०  | २९ | ४७ | ज्ये. | ६० | ०  | ऐ.    | २६ | ४६ | व.   | ६० | ०  | पद्म   | वृ.       | ३२  | ५०  | ५   | २६ | १०  |    |
| २७ | म.  | ११  | ३४ | ४  | ज्ये. | १  | ७  | वै.   | २७ | ४९ | व.   | १  | ५५ | मुद्गर | ११        | ७   | ३२  | ४७  | ५  | २७  | ११ |
| २८ | बु. | १२  | ३७ | २८ | मू.   | ६  | २९ | वि.   | २८ | ९  | ब.   | ५  | ४६ | ध्वज   | घ.        | ३२  | ४४  | ५   | २७ | १२  |    |
| २९ | वृ. | १३  | ३९ | ४४ | पु.   | १० | ५५ | प्रो. | २७ | ४१ | शां. | ८  | ३६ | धाता   | २६        | ४४  | ३२  | ४१  | ५  | २८  | १३ |
| ३० | शु. | १४  | ४० | ४६ | उ.    | १४ | ११ | अ.    | २६ | १४ | मा.  | १० | १५ | काल    | म.        | ३२  | ३८  | ५   | २९ | १४  |    |
| ३१ | भा. | १५  | ४० | ३२ | ध.    | १६ | ९  | मौ.   | २३ | ४७ | म.   | १० | ३९ | स्थिर  | ४६        | ३३  | ३२  | ३४  | ५  | २९  | १५ |

चन्द्रोदय गुलाधमरिभः (अगस्त ८ ता. ३१) हस्तसौम्य  
 अ २ गुरुः ८।  
 भ. ३५।१२ उ. वराह जयति ४ अश्लेषायां रविः ७८  
 भ. ५।३७ या. मङ्गलः ४ e आर्द्रायां ४ भौमः ५८  
 नाग ५ नागपूजनम्, ल.पु.दानघाट घावाखेल नागदह  
 ४ मेला, कल्कीजयंती अश्लेषायां बुधः २  
 भ. १५।२ उ. ४७।२६ या. \* जनैलगाउनुपछे।  
 अष्टमी व्रतम्, (जालपञ्चदानं) b २ रानिः ५९।३३  
 पुनर्वसौ १ भौमः २ उफायां शुक्रः ४५ c भौमः १  
 t गुह्यीपुत्ती पू. व्रतम्, घ. पं. प्र. ४६।३३ उ.  
 भ. १।५५ उ. ३४।४ या. पुत्रदा ११ व्रतम् हस्तसौम्य  
 (वह्निबोये) सिंह बुधः १९।५३ कन्यायां शुक्रः ३२।१३  
 प्रदोषव्रतं d वीरपत्तिः, ल.पु.कुंभेश्वरमेला (ब्याजानके) t  
 भ. ४०।४७ उ. श्रीशिवस्य पवित्रारोपणम् पुनर्वसौ २८  
 भ. १०।३९ या. ऋषितपेणी १५ रक्षाबन्धनं हयग्री d

| शु. | मं. | बु. | वृ. | शु. | भा. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ३   | २   | ३   | ५   | ४   | ५   | ३   |
| १९  | १७  | १६  | १४  | १३  | १२  | ७   |
| ग.  | ८   | २६  | ५   | ४४  | २०  | ३१  |
| २४  | १०  | ५८  | ५८  | ४७  | ४१  | ५६  |
| ३७  | ५७  | ४०  | १०८ | १०  | ७१  | ५   |
| १८  | १७  | ३६  | ३५  | २   | ५८  | २५  |

| शु. | मं. | बु. | वृ. | शु. | भा. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ३   | २   | ३   | ५   | ४   | ५   | ३   |
| २६  | २३  | २१  | २६  | १४  | २७  | १३  |
| ग.  | ४९  | ३   | ५१  | ५६  | ४२  | ११  |
| २३  | ५४  | २८  | ४३  | १०  | ५८  | ४१  |
| ३७  | ५७  | ४०  | ११० | १०  | ७१  | ५   |
| १२  | ६   | ०   | ४७  | ५२  | ५१  | ११  |

२८ बु. ५ २८ शु. ६

|                        |           |
|------------------------|-----------|
| शु. ५                  | मं. ३     |
| वृ. श. ४ सु. बु. रा. २ |           |
| ७                      | १         |
| ८                      | १० के. १२ |
| ९                      | ११        |

मं. मा. उ. बु. मा. अ., वृ. मा. उ.  
 शु. मा. उ. प., श. मा. उ.

अथ नागपूजने विशेषः—नाम ५ मा-गोमय नागबनाई नागको मानपत्रमा दीपकलशं गणेश पूजनपूर्वकं दधिदूधकिंकर कुश सिंदूर गंधादिले नागको पूरा गरी डांस्नाले सर्पको भय हुंदैन । सर्वविषनाशन मन्त्रः—ओम् कुरुकुलये हुफदस्वाहा । यो मन्त्र परिमित जपी फुको दिनाले सर्पको विषनाश हुन्छ । नागपूजने गृहारम्भे नागशीरो ज्ञानम्—भाद्राश्विन कार्तिकमा पूर्वशीर, मार्ग पौष माघमा दक्षिण फा, चैत्र वैशाखमा पश्चिम, ज्येष्ठाषाढ आषाढमा उत्तर दिशा नागको शीर हुन्छ । अत्र रक्षा बन्धन—येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबन्धामि रक्षे माचल-माचल । यज्ञोपवित ( जनै ) शुद्ध पवित्र जमीनमा उपजेको कपासबाट सघवा ब्राह्मणीले कातेका धागाले विधिपूर्वक बनाएको जनै शास्त्रविधिसे संस्कार गरी मन्त्रीएको\*



श्री शाके १२०३ श्रीसंवत् २०३८ भाद्रपदकृष्णपक्षः (गुल्लागा) पा० २४ उभा. भ० मृ. पु. ति. म. (अगस्त ८) दक्षिणायनं-वर्षर्तुः

२

| ग. | वा. | ति.  | घ. | प.  | न. | घ. | प.   | या. | घ. | प.  | क. | घ. | प.       | योगाः | चन्द्ररावि. | मा. | सू. | उ. | ता. | १  | कन्यायां सायनाकः ४५ त्रिपु. १५३३.१११९ या. |
|----|-----|------|----|-----|----|----|------|-----|----|-----|----|----|----------|-------|-------------|-----|-----|----|-----|--|---|
| ३२ | आ.  | १३९  | १  | घ.  | १६ | ५७ | शो.  | २०  | २० | वा. | २४ | ६  | मातृ     | कु.   | ३२          | ३१  | ५   | ३० | १६  | गताया (सापाह) मगुरुः ५५ तिप्ये १ राहुः उषायां              |   |
| १  | मो. | २३६  | २  | श.  | १६ | ३४ | अ.   | १५  | ५७ | त.  | ७४ | २  | अमृत     | कु.   | ३२          | २८  | ५   | ३१ | १७  | मघायां १ सिंहजः ४१३ (भाद्र) संक्रान्तिः (दधुसाया)          |   |
| २  | मं. | ३३३  | ३  | पु. | १५ | ७  | मु.  | १०  | ४१ | व.  | ४३ | २  | काण      | ०१२९  | ३२          | २४  | ५   | ३१ | १८  | म. ४१३२३. ३२१४२ या. यथात्रा नारायणायात्रा चा               |   |
| ३  | वृ. | ४२८  | ४  | उ.  | १२ | ४५ | घ.   | १४  | ३९ | व.  | ११ | ३३ | लुम्ब    | मी.   | ३२          | २१  | ५   | ३२ | १९  | पुनर्वसौ ३ भौमः १० पूकाया बुधः ३६ हस्तर्धे ३ म             |   |
| ४  | वृ. | ५२२  | ५  | रे. | ९  | ३६ | गं.  | ५०  | ५४ | ग.  | ५० | ५  | मित्र    | ११३६  | ३२          | १८  | ५   | ३२ | २०  | घ. प. निवृत्तिः ११३६ हस्तर्धे शुक्रः ५६ (मतया)             |   |
| ५  | शु. | ६१७  | ६  | अ.  | ५  | ५६ | वृ.  | ४३  | २३ | मं. | ४४ | ११ | वज्र     | मे.   | ३२          | १५  | ५   | ३३ | २१  | म. १७१३३ उ. ४४१११ या. आचारदमुक्ताभरण उन्नतम्               |   |
| ६  | श.  | ७११  | ७  | मं. | ४  | ४७ | शु.  | ३५  | ४७ | वा. | ३८ | ३  | धर्वाक्ष | १५१५० | ३२          | ११  | ५   | ३४ | २२  | श्रीकृष्णजन्मा. व्रतम् श्रीवृष्णजयन्ति दूर्वा ८ व. म वादिः |   |
| ७  | र.  | ८०६  | ८  | रो. | ५  | ३८ | व्या | २८  | ०  | त.  | ३१ | ५४ | घाना     | वृ.   | ३२          | ८   | ५   | ३४ | २३  | कृष्णयात्रा लपु. भीमयात्रा पाल्पानानसेन भगवती-d            |   |
| ८  | गो. | १०५  | ९  | रम. | ४  | ४० | ह.   | २०  | २८ | व.  | २५ | ५६ | आनन्द    | २११३३ | ३२          | ५   | ५   | ३४ | २४  | भा. २५१५६ उ. ५३१२ या कर्कटेभीमः २०१५१                      |   |
| ९  | मं. | ११४७ | १० | आ.  | ४  | ३३ | व.   | १३  | १३ | व.  | २० | २३ | चर       | मि.   | ३२          | १   | ५   | ३६ | २५  | अजा ११ व्रतम् त्रिपु. ४७४४ उ. ५ बुधः ५१                    |   |
| १० | वृ. | १२४३ | ११ | पु. | ४  | २७ | मि.  | ६   | २३ | को. | १५ | २३ | गद       | २९१८  | ३१          | ५७  | ५   | ३६ | २६  | मगुरुः तिप्ये १ भौमः ३१ क. बुधः ४१४३ पञ्चि. उ. ५           |   |
| ११ | वृ. | १३३० | १२ | नि. | ८  | १८ | व्य. | १४  | २० | ग.  | ११ | ८  | शुभ      | क.    | ३१          | ४३  | ५   | ३८ | २७  | म. ३९११४ उ. प. अ. उफायां बुधः ६ (आलपंचदानं-जुग)            |   |
| १२ | शु. | १४३६ | १३ | अ.  | ८  | ०  | प.   | ८०  | ५३ | मं. | ७  | ४९ | मृत्यु   | ४०१३३ | ३१          | ४०  | ५   | ३८ | २८  | म. ७१४९ या., (पञ्चदान पूजाचहृपूजा) a ३ केतुः १             |   |
| १३ | श.  | ३०३४ | १४ | मं. | ४  | ०  | जि.  | ४३  | ७  | च.  | ५  | ३३ | पदम      | मि.   | ३१          | ४४  | ५   | ३० | २९  | कुशच्छेदनं गोकर्णस्तानम्, भन्वादि, दर्शथादम्, कुशः।        |   |

| १९  | मं. | बु. | वृ. | शु. | मं. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| भा. | ४   | २   | ४   | ५   | ५   |
| ग.  | १   | ०   | २५  | ३   | १६  |
| २   | ३१  | ३८  | ४२  | १३  | २५  |
| ३   | ३८  | ३३  | २४  | ३२  | २६  |
| ४   | ५७  | ३२  | १०  | ११  | ७१  |
| ५   | ३६  | ४५  | २३  | २८  | ३५  |

| २०  | मं. | बु. | वृ. | शु. | मं. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| भा. | ४   | ३   | ४   | ५   | ५   |
| ८   | ७   | ०   | २०  | १३  | १४  |
| ग.  | १४  | १०  | १८  | ३३  | २०  |
| २   | ५०  | २९  | ५३  | ७   | १८  |
| ३   | ५७  | ३२  | १०  | ११  | ७१  |
| ४   | ५३  | ४५  | २३  | २८  | ३५  |

| वृ. | ६  | ज. | ग.  | रा. | ४  |
|-----|----|----|-----|-----|----|
| ७   |    |    |     |     |    |
|     |    | ५  | सु. | वृ. |    |
|     | ८  |    |     |     | १  |
| ९   |    |    |     |     |    |
|     |    | ११ |     |     |    |
| क.  | १० |    |     |     | १० |

अथ कुशच्छेदन मन्त्रः—त्रि रश्मिना सहोत्पन्न परमेष्ठी निसर्गतः । नुदः सर्वाणि पानानि दधंस्वन्निको भव ॥ यो मन्त्रले प्रार्थना गरी ॥ ऊँ फट् स्वाहा यो मन्त्रले पूर्वोत्तरमुखगरी छेदन गर्त । अथ वर्षा विचार—अतिवृष्टि अनावृष्टि भणमा अनिकाल, अकाल को वर्षा ले रोग भय, अकालमा ३ दिन वढी वर्षा भएत्यस देश का प्रधान पुरुष को वधः ७ दिन वर्षा भए राजा मा पीडा प्रजा मा रोग । हाड मांस वोसो तेल रगत अंगार धूलो माछोः सर्प म्यागुतो गडेउलो वस्यो भने देश मा पर चक्र भय जनता मा रोग भय हुन्छ । सिहार्को गो प्रसवे नारदः- भानो सिंहगते चैव यस्य गौ संप्रसूयते । वर्षा तस्य निर्विष्ट पटुभिर्मणिः न संशयः । अथ ज्ञानि प्रकृतव्यम् ।

१ सु. ५ १३ वृ. ६, ८ मं. ५  
म. मा. उ. वृ. मा. १३ उ. वृ. ५  
उ. शु. मा. उ. प. श. मा. ३

श्रीवाके १९०३ श्रीनवत् २०३३ भाद्रपद शुक्लपक्षः (जलाश्व) पा. ह. ज्ये. उपा. उभा. (अमरत ८ गिनवर्ग ९) दक्षिणायन-वर्षः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | घ. | प. | यो. | घ. | प. | क.   | घ. | प. | योया:    | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|------|----|----|----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| १४ | आ.  | १३  | ४  | १३ | ४  | २  | ५  | नि  | ४३ | १० | कि.  | ४२ | ७  | छन       | ५०        | ३१  | ४०  | ५   | ४० | ३०  |
| १५ | मा. | २३  | ४  | १३ | ४  | २  | ५  | मा  | ४१ | ३१ | वा.  | ४० | ७  | ओवला     | कं.       | ३१  | ३६  | ५   | ४१ | ३१  |
| १६ | म.  | ३३  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | सोम्य    | क.        | ३१  | ३२  | ५   | ४१ | ३१  |
| १७ | व.  | ४४  | १  | ४  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | त्र. | ४० | ३  | कान      | २१        | ३१  | ३६  | ५   | ४२ | ३१  |
| १८ | श.  | ५४  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | श.  | ४१ | ३१ | व.   | ४० | ३  | सिधर     | तु.       | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| १९ | भा. | ६४  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | भा. | ४० | ४१ | का.  | ४० | ३  | मातङ्ग   | ४१        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २० | आ.  | ७४  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | ग.   | ४० | ३  | शुभ      | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २१ | मा. | ८४  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | भ.   | ४० | ३  | मृत्यु   | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २२ | म.  | ९४  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | पद्म     | १८        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| २३ | व.  | १०  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | छत्र     | घ.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २४ | श.  | ११  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | श.  | ४० | ४१ | त्र. | ४० | ३  | श्रीवत्स | ४१        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| २५ | भा. | १२  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | भा. | ४० | ४१ | व.   | ४० | ३  | साम्य    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २६ | आ.  | १३  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | कौ.  | ४० | ३  | धूम्र    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| २७ | मा. | १४  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | न.   | ४० | ३  | वह्ने    | ४१        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| २८ | म.  | १५  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | र.   | ४० | ३  | रक्ष     | कुं.      | ३०  | ४३  | ५   | ४३ | ३१  |
| २९ | व.  | १६  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | मृगल     | १९        | ३३  | ३०  | ५   | ४३ | ३१  |

म. पा. उ. व. मा. उ., वृ. पा. उ. य. मा. उ. र. ज. मा. उ.  
 गुरुधर्ममसासि: विष्णु, ४०५ उ. पु. फलयां रवि: ५६  
 चन्द्रोदय: (दखाने) ति. ३०) निवर्क्षे शुक्र: १६  
 हरितालिका ३ वन (नीज) मन्वादि: (मिन. ९१)  
 अ. ८४२ उ. ४०१९ मा गणेश ४ (चया) चन्द्र-४  
 ऋषि ५ राशि पूजा (कोखजाविण) तिथ्ये २ भौम: ४२  
 मय ६ अगस्त्योदय: २० हस्तक्षे वृध: १० दशमोदय:  
 भ. ५४१२९ उ. भ. गु. म. हलकुण्डमेलन विपुलकर ५१३ उया. २  
 भ. २६५७ उया. अ. व्रतं श्रीमहालक्ष्मी व्रतारभ: कारो-  
 हरवरी ८ कायजस्तानम्, कागेश्वरमेलन तुलायां शक्र:  
 तिथ्ये ३ भौम: ५९१३९ उरधिदानम्, हस्तक्षे व्रति ५१  
 भ. ३५१३० उ. वृ. व्रतम् उका. रवि: ४० निवर्क्षे शुक्र: ४०  
 भ. ९१४२ या. हरिपरिवर्तिनी ११ व्रतम् वामन १२, ८  
 प्र. व्रतं इन्द्रध्वजो स्थानम् (मतलोयके) हस्तक्षे शुक्र: ४४  
 (हंगया) धर्म. प्रवृत्ति: ४५७ स्वात्यां शुक्र: ३९ ५५१९  
 भ. ९१२१ उ. ३८५ या. अनंत १४, कुमारी इन्द्रयात्रा, ८  
 इन्द्रवह्ने स्तान, (मइयापुन्ही) श्राद्धारम्भ, प्रतिपच्छा-३

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | घ. | प. | यो. | घ. | प. | क.   | घ. | प. | योया:    | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|------|----|----|----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| ३० | आ.  | १७  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | भ.   | ४० | ३  | मृत्यु   | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३१ | मा. | २७  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | पद्म     | १८        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३२ | म.  | ३७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | छत्र     | घ.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३३ | व.  | ४७  | १  | ४  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | त्र. | ४० | ३  | श्रीवत्स | ४१        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३४ | श.  | ५७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | श.  | ४० | ४१ | व.   | ४० | ३  | साम्य    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३५ | भा. | ६७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | भा. | ४० | ४१ | का.  | ४० | ३  | धूम्र    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३६ | आ.  | ७७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | ग.   | ४० | ३  | शुभ      | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३७ | मा. | ८७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | भ.   | ४० | ३  | मृत्यु   | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३८ | म.  | ९७  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | पद्म     | १८        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ३९ | व.  | १०७ | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | छत्र     | घ.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |

अथपाक्षिक व्रत विचारः—भाद्र शुक्ल तृतीया हरतालिका—चतुर्थी मंहिता यातु सा तृतीया फलप्रदा ! अवैधव्यतकरा स्त्रीणां पुत्र पीत्र प्रवर्धनी  
 भाद्रशुक्ल चतुर्थी गणेश. ८ अस्मिन् चन्द्रव्रतन दायमन्त्रस्य शान्तये मन्त्रः—सह प्रमेनमवधीत् सिर्हां जाम्बवताहतः । मुकुमारक मारोदीतव ह्यप स्यमन्तक इति ।  
 पंचम्या मपामागणवन्त धावन मन्त्रः—आयुर्वर्त्त यजो वर्च प्रजापण वसतिच । ब्रह्मप्रजाञ्चमेधाञ्चत्वत्सो देहियजो वलम् ॥ द्वादश्यां विष्णुपरिवर्त्तनोत्सवः । राशौ  
 पौडोपचारैः विष्णु मपुष्य प्रार्थयेत् । वामदेव जगन्नाथ प्राप्त्यन्तर्द्वारणी तव । पार्श्वेन परिवर्त्तस्व मुखं स्वपीहि माधवेति ॥ ८ द्दम. तिथ्ये ४ भौमः २०

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | घ. | प. | यो. | घ. | प. | क.   | घ. | प. | योया:    | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|------|----|----|----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| ४० | आ.  | १८  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | भ.   | ४० | ३  | मृत्यु   | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४१ | मा. | २८  | ४  | ३  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | पद्म     | १८        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४२ | म.  | ३८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | छत्र     | घ.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४३ | व.  | ४८  | १  | ४  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | त्र. | ४० | ३  | श्रीवत्स | ४१        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४४ | श.  | ५८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | श.  | ४० | ४१ | व.   | ४० | ३  | साम्य    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४५ | भा. | ६८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | भा. | ४० | ४१ | का.  | ४० | ३  | धूम्र    | म.        | ३०  | ५६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४६ | आ.  | ७८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | आ.  | ४० | ४१ | ग.   | ४० | ३  | शुभ      | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४७ | मा. | ८८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | मा. | ४० | ४१ | भ.   | ४० | ३  | मृत्यु   | व.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४८ | म.  | ९८  | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | म.  | ४० | ४१ | वा.  | ४० | ३  | पद्म     | १८        | ३३  | ३१  | ५   | ४३ | ३१  |
| ४९ | व.  | १०८ | ३  | ४  | ३  | २  | ५  | व.  | ४० | ४१ | तै.  | ४० | ३  | छत्र     | घ.        | ३१  | ३६  | ५   | ४३ | ३१  |





श्रीशके १२०३ श्रोसंवत् २०३८ आश्विन शुक्लपक्षः (कौलाथव) पा.ह.अ.ज्ये.उषा. २४ पूभा.उभा. (सितम्बर ९, अक्टोबर १०) दक्षिणायनंशरदुतुः २६

| न       | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.   | प्र. | प. | योगः  | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |   |
|---------|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|------|------|----|-------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|---|
| १३      | मं. | १   | ८  | ३० | ह.    | ६  | ६  | ए.    | ५८ | ७  | वा.  | ४०   | ८  | सोम्य | ३८        | २६  | २९  | ३०  | ६  | ४२९ |   |
| १४      | वृ. | २   | ११ | ४६ | वि.   | १० | ४  | वै.   | ५८ | ४  | वै.  | ४२   | ५  | काळ   | तु.       | २९  | ३०  | ६   | ५  | ३०  |   |
| प्र. १५ | वृ. | ३   | १६ | २२ | स्वा. | १६ | २  | वि.   | ५९ | ४  | वै.  | ४८   | ६  | गिथर  | तु.       | २९  | ३१  | ६   | ६  | १   |   |
| १६      | श.  | ४   | २० | ५८ | वि.   | २२ | ३  | प्रो. | ६० | ०  | व.   | ५३   | ६  | मातृ  | न.        | ३०  | २९  | ६   | ७  | २   |   |
| १७      | श.  | ५   | २६ | १० | अ.    | २९ | १  | प्रो. | १  | ४  | को.  | ५८   | ४  | अमृता | वृ.       | २९  | २९  | ६   | ८  | ३   |   |
| प्र. १८ | आ.  | ६   | ३१ | १२ | ज्ये. | ३५ | ३  | आ.    | २  | ४  | ग.   | ६०   | ०  | काण   | ३५        | ३३  | २९  | १८  | ६  | ९   | ४ |
| १९      | तो. | ७   | ३५ | ४१ | मृ.   | ४१ | १  | तो.   | ३  | ४  | ग.   | ३२   | ९  | लम्ब  | घ.        | २९  | १४  | ६   | १० | ५   |   |
| २०      | मं. | ८   | ३९ | १२ | मृ.   | ४८ | १  | मं.   | ४  | २  | मं.  | ७२   | ८  | मित्र | घ.        | २९  | ९   | ६   | १० | ६   |   |
| २१      | वृ. | ९   | ४१ | ४२ | उ.    | ५० | ०  | अ.    | ४  | ८  | वा.  | १०   | २  | वज्र  | म.        | २९  | ९   | ६   | ११ | ७   |   |
| २२      | वृ. | १०  | ४२ | ५८ | ध.    | ५२ | ३  | मृ.   | ३  | १  | त.   | १२   | २  | ध्वज  | म.        | २९  | १   | ६   | १२ | ८   |   |
| २३      | श.  | ११  | ४२ | ५६ | ध.    | ५३ | ५  | ध.    | ५  | ३  | व.   | १२   | ५  | धाना  | कुं.      | २९  | ११  | ६   | १३ | ९   |   |
| प्र. २४ | श.  | १२  | ४३ | ३७ | श.    | ५३ | ५  | ग.    | ५  | ३  | व.   | १२   | ५  | आनन्द | कुं.      | २९  | ११  | ६   | १३ | १०  |   |
| २५      | आ.  | १३  | ४३ | ३९ | पु.   | ५२ | ५  | वृ.   | ४  | ८  | कां. | १०   | ३  | नर    | कुं.      | २९  | ११  | ६   | १४ | ११  |   |
| २६      | तो. | १४  | ४५ | ३९ | उ.    | ५० | ५  | धृ.   | ४  | २  | ग.   | ७    | ८  | गद    | मि.       | २९  | १४  | ६   | १५ | १२  |   |
| १२७     | मं. | १५  | ४३ | १३ | रे.   | ४८ | ७  | वा.   | ३  | ६  | भ.   | ३३   | ८  | शुभ   | शुभ       | ४८  | १७  | ६   | १६ | १३  |   |

k ८१३० उ. तलासनगु. f ४ शनिः ३  
 चन्द्रोदयनवराहार्भाः प्रदस्थापना वक्त्री बुधः ४ विपु. k  
 अहलेपायां ३ भौमः ३३ ७ घ. पं प्रवृत्तिः २३ ११ अन्न-  
 भ. ४८ १० उ. (अष्टोत्तर १० ता. ३१) खणियावा  
 भ. २० ५८ या. वृश्चिके शक्रः ५५ १० पश्चिमाग्नौ १०  
 उवांगललिताप्रतमनवलीभैरवयात्रा b (नाल) ६३० ६  
 त्रिवलिसंज्ञम् a (कुलगनी) अनुगधायाशुक्रः ५४  
 भ. ३५ ४१ उ. मरस्वत्याव हनं नव पत्रिकाप्रवेष्टा a  
 भ. ७२ ८० अ. अ. महाप्रमात्रतं, (कुशिम्वे) अहले-  
 महानवमीप्रतम्. (स्याकोट्याको), मन्त्रादिः  
 विद्या १० (टीका), (खड्गगात्रा) कण्यायां भुमः २४ ३० b  
 भ. १२ ५७ उ. ४२ १६ य. पापां ११ प्रतं (अमचालं  
 विवक्षैरविः ४८ ७ पायां ४ भौमः ५ विवक्षै २ गुनः ४४  
 प्र. ब्र. गिरे भौमः ४० ६ १ अ. व. नि. पु. घ. पं. नि. ४५ ७  
 भ. ३५ ३९ उ. अखिलवलिः निकोजापत १५ ब (विगया)  
 भ. ३१ ८ या. १५ पू. नन कारिकम्भाननाकाजदीपदः १५

| वा. | मं. | वृ. | श. | आ. | रा. |
|-----|-----|-----|----|----|-----|
| १९  | १८  | २६  | १  | २६ | २९  |
| २०  | २२  | ४७  | २४ | ५९ | ४१  |
| २१  | २४  | ५५  | ५७ | २२ | १९  |
| २२  | २६  | ३८  | १३ | ६७ | ७   |
| २३  | २८  | २६  | २३ | १८ | ३७  |

| वा. | मं. | वृ. | श. | आ. | रा. |
|-----|-----|-----|----|----|-----|
| २४  | २५  | ०   | २६ | २७ | १०  |
| २५  | २८  | १८  | १६ | ४३ | २४  |
| २६  | २९  | २७  | १५ | ४८ | ५६  |
| २७  | ३१  | ४८  | १३ | ६६ | ७   |
| २८  | ३३  | ५७  | १३ | ७३ | ११  |

| वा. | मं. | वृ. | श. | आ. | रा. |
|-----|-----|-----|----|----|-----|
| २९  | ३५  | ७   | २२ | ७८ | ६   |
| ३०  | ३७  | १४  | २३ | ८३ | ११  |
| ३१  | ३९  | २३  | २४ | ८८ | १६  |
| ३२  | ४१  | ३३  | २५ | ९३ | २१  |
| ३३  | ४३  | ४३  | २६ | ९८ | २६  |

अथदुर्गासन्धानम्—प्रतिपदामा घटस्थापना गरी नवमी सम्म दुर्गापूजा एकोत्तर वृद्धिले कुमार। पूजा महाकाया महानभ्यो महानरस्वती पूजा  
 सप्तमनीपाठ नवन भोजन दशमीमा विसर्जन गरी प्रसाद (टीका) लगाउनाले वर्ष भर सुख शान्ति मिल्दछ । जगन्माना भगवती जीवयन्तीने मात्र खुसी  
 हुने होइनन् थुडा भक्तिले पनि हुन्छ । स्मार्त बलिदान—कुम्भाण्ड नारिकेलञ्च श्रीफलं चक्षुमेव च । वस्त्रेण वेष्टितं कृत्वा रुद्रयेच्छुरिकादिभिः ॥ एष  
 स्मार्तवलिः प्रोक्तः धर्मशास्त्रानुगामिभिः ॥ यस्य यवाधिकाभक्तिस्तेन तुष्यन्ति देवता ॥ पञ्चवनि गर्दा—रोगाको सट्टा कुभिण्डो, बोकाको सट्टा तरि-  
 बोल-भेडाको सट्टावेल, हाँसको सट्टा, ऊबु, कुबुराकोमट्टा काको अथवा धिरनो, यस्तो बलिदान गर्नु योग्य छ ॥

म. मा. उ. वृ. १३ व. १६ अ.  
 वृ. ना. अ. शु. मा. उ. प. श.  
 मा. अ.



श्रीश्राद्धे १९०३ श्रीसंवत् २०३८ कार्तिक कृष्णपक्षः ( कौलागा ) पा० भ. मृ ति. म. ह. स्वा. (अक्टूबर १०) दक्षिणायनं शरदृतुः

| ग.      | वा. | ति. | घ. | प. | न.  | घ. | प. | यो.  | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगः     | चन्द्ररा. | दि. | मा. | मृ. | ज. | ता. |
|---------|-----|-----|----|----|-----|----|----|------|----|----|-----|----|----|----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| २८      | वृ. | १   | २६ | १४ | अ.  | ४४ | ३० | ह.   | २९ | २३ | तै. | ५३ | २६ | मृत्यु   | मे.       | २८  | ३६  | ६१३ | १४ |     |
| २९      | वृ. | २   | २० | ३८ | भ.  | ४० | ४५ | व.   | २१ | ५६ | व.  | ४७ | ४१ | पद्म     | प.        | ४१  | ४२  | ६१८ | १५ |     |
| प्र. ३० | शु. | ३   | १४ | ४४ | कु. | ३६ | ३४ | सि.  | १४ | १२ | व.  | ४१ | ४१ | छत्र     | वृ.       | २८  | २८  | ६१९ | १६ |     |
| १       | श.  | ४   | ८  | ३९ | रो. | ३२ | २० | व्य. | ४६ | ३३ | की. | ३५ | ४० | श्रीवत्स | वृ.       | २८  | २४  | ६१९ | १७ |     |
| २       | आ.  | ५   | ३  | ३३ | मृ. | २८ | १८ | प.   | ५१ | ०  | ग.  | २९ | ५१ | नीम्य    | ०         | १९  | २८  | ६२० | १८ |     |
| प्र. ३  | मो. | ७   | ५१ | ५० | आ.  | २४ | ३७ | शि.  | ४३ | ४९ | भ.  | २४ | २५ | काल      | नि.       | २८  | १६  | ६२१ | १९ |     |
| ४       | मं. | ८   | ४७ | १८ | पु. | २१ | ३१ | सि.  | ३७ | ८  | वा. | १९ | ३४ | स्थिर    | ७         | १७  | २८  | ६२२ | २० |     |
| ५       | वृ. | ९   | ४३ | ३६ | ति. | १९ | ९  | सा.  | ३१ | ४  | तै. | १५ | २७ | मातङ्ग   | क         | २८  | ८   | ६२२ | २१ |     |
| ६       | वृ. | १०  | ४० | ५६ | अ.  | १७ | ४४ | शु.  | २५ | ४८ | व.  | १२ | १६ | अमृत     | १         | ७   | ४४  | ६२३ | २२ |     |
| ७       | शु. | ११  | ३९ | २३ | म.  | १७ | २३ | शु.  | २१ | २३ | व.  | १० | ९  | काण      | मि.       | २८  | ०   | ६२४ | २३ |     |
| प्र. ८  | श.  | १२  | ३९ | ४  | पु. | १८ | ९  | वृ.  | १७ | ५५ | की. | ९  | ३३ | लुम्ब    | ३         | ३   | ४०  | ६२५ | २४ |     |
| ९       | आ.  | १३  | ४० | ३  | उ.  | २० | १३ | ऐ.   | १५ | २८ | ग.  | ९  | ३३ | मित्र    | क.        | २७  | ५२  | ६२६ | २५ |     |
| १०      | सो. | १४  | ४२ | १८ | ह.  | २३ | ३० | वै.  | १४ | ०  | भ.  | ११ | १० | वज्र     | ५         | ५   | ४३  | ६२७ | २६ |     |
| ११      | मं. | १०  | ४५ | ४१ | नि. | २७ | ५६ | वि.  | १३ | २८ | व.  | १३ | ५९ | ध्वांक्ष | तु.       | २७  | ४४  | ६२७ | २७ |     |

पूर्वादिः यनिः ३८ ६ ३९।४ या. पू. उ. वृ. ३७  
 भ. ४७।४१ या. हस्तयो बुधः २२ पञ्चमराज. १३  
 भ. १४।४४ या. पूजा, नि. वृ. १४ स्वन्ति जले पूजा  
 तुलायामर्कः ३१।३० (कार्तिक) सक्रान्तिः मघायां २४  
 भ. ५७।१ उ. पूर्वादियो बुधः २१  
 भ. २४।२५ या. a भौमः १८ ज्येष्ठर्षे शुक्रः ५६  
 अष्टमी व्रतम् पुनर्वसो ४ राहुः उषायां २ केतुः ५४  
 तुलायां गुरुः ५५।१३ मार्गशुभः ४९  
 भ. १२।१६ उ. ४०।५६ या. मघायां ३ भौमः ५९।३६  
 रमा ११ व्रतम् वृश्चिके सायनार्कः ५८  
 गोवत्सः १२ स्वात्यां रविः १३ त्रिपुण्करः १८।९ उ. t  
 भ. ४०।३७, प्रदोष व्रतम् काकवलि, यमदोष दानम्, u  
 भ. ११।१० या. नरक १४ प्रत्युषेऽभ्यङ्ग स्नानं, इव. e  
 दर्शश्राद्धमदीपमालिका लक्ष्मीपूजा

| २८ सु. मं. | ३० वृ. शु. मा. रा. |
|------------|--------------------|
| का. ६४     | ५७७७७७             |
| ३० ४       | २२२०१००३           |
| ग. ३४०     | ३२२८००३५०          |
| २४३४       | १५१५३००            |
| ३५९३५      | १११३६०३३           |
| ४४४०       | ४२४३१२११           |
| २९ सु. मं. | ३० वृ. शु. मा. रा. |
| ता. ६४     | ५६७७७७             |
| १० ४       | २३१००००३           |
| ग. २८८     | ३११५३१३१           |
| ३५६०३४     | ३३१०००३            |
| ३० १२३     | १६२९५८१३१          |

१ सु. ७, ५ वृ. ७

|         |       |
|---------|-------|
| शु. ८   | वृ. ७ |
| १ सु. ७ | ५ मं. |
| १० के.  | रा. ४ |
| ११      | १     |
| १२      | २     |

मं. मा. उ. वृ. ५ मा. २८, वृ. मा. न  
 शु. मा. उ. प., ग. मा. ३३.

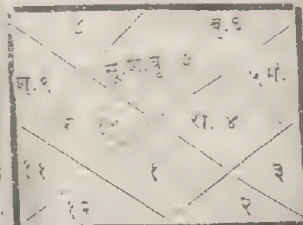
अथ कार्तिक स्नान मन्त्र—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन । प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह । का. कृष्ण त्रयोदशीमा यम दीप दान काक बलिदान, १४ मा प्रातः अभ्यंगस्नान ४ सुने दीप दान, श्व (कुक्कुर) पूजा अमावस्या को संध्यामा अनंत दीपदान गरी लक्ष्मी पूजा— राज्यन्तया सूर्य शब्द ले दरिद्रा निःकारण गर्नु । भाद्र शुक्लको वाकि-पान, दिवासयन, मैथुन, तेन, रोवन, मिथ्या वचन, ई व्रतभङ्ग गर्ने हुन् कदाचित्- व्रतभङ्ग हुन गएमा, अष्टाक्षरी, ॐ नमो नारायण यो मन्त्र १०८ जपनु व्रतभंग हुदैन ।

श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ कार्तिक शुक्लपक्षः (कछलाश्व) पा० स्वा.मू.उषा.श.पूभा. आश्वि.(अक्टो. १० नव.११) दक्षिणायन-शरदृतुः

| ग.वा.ति.घ.प.न.घ.प.यो.घ.प.क.घ.प. | योगा: चन्द्र रा.दि.मा.सू.उ.ता.               |
|---------------------------------|--|
| १२ बु.                          | १५० ४ स्वा ३३ २४ प्रो. १३ ४५ कि. १७ ५२ धूम्र |
| १३ बु.                          | २५५ ६ वि. ३९ ३० आ. १४ ३८ बा. २२ ३५ वरु       |
| १४ शु.                          | ३६० ० अ. ४६ १ सो. १५ ५६ तै. २७ ४५ रक्ष       |
| १५ श.                           | ३ ० २५ ज्ये. ५२ २७ शो. १७ २२ व. ३२ ५८ मसल    |
| १६ आ.                           | ४ ५ ३१ मू. ५८ २३ अ. १८ ३० व. ३७ ४७ सिद्धि    |
| १७ सो.                          | ५ १० ४ पु. ६० ० सु. १९ ११ को. ४१ ५३ उत्पात   |
| १८ मं.                          | ६ १३ ४ पु. ३ २७ घृ. १९ ७ ग. ४४ ५७ मित्र      |
| १९ बु.                          | ७ १६ १२ उ. ७ ३४ शु. १८ १४ म. ४६ ५० सुदगर     |
| २० बु.                          | ८ १७ २९ श. १० २५ ग. १६ २१ वा. ४७ २९ ध्वज     |
| २१ शु.                          | ९ १७ २९ घ. १२ १ बु. १३ २८ तै. ४६ ५० धाता     |
| २२ श.                           | १० १६ १२ श. १२ २३ घृ. ९ ३६ व. ४४ ५९ आनन्द    |
| २३ आ.                           | ११ १३ ४७ पु. ११ ३९ आ. ४२ ३ चर                |
| २४ सो.                          | १२ १० १९ उ. ९ ५३ व. ५२ ४९ को. ३८ ८ गद        |
| २५ मं.                          | १३ ५ ५८ रे. ७ १६ मि. ४५ ५३ ग. ३३ २८ शुभ      |
| २६ व.                           | १४ ५ ५८ अ. ३ ५ उदय. ३८ २८ म. ३८ ११ मृत्यु    |

हृपूफायां २ भोमः ४१ स्वात्वावृध ३ श्री चागुनायण d  
 गो गोवर्धनपू. वलिपू. हृपू. सवाया ४ भो. ४७  
 यम २ आतृ २, (भाईटीका) चन्द्रादय. (विजापूजा)  
 घनुपिण्डकः ३११० b रविः ३१ चित्रार्थे ४ गुण २०  
 भ. २२५८ उ. d भोमपंचकारंभः d अमण्डदीप द०  
 म. ५१३१ या. (नवम्बर ११ ता ३०)  
 ८ वातुर्मस्यव्रतं, समाप्तिः कार्तिकस्नान पूर्णिमाव्रतम्, c  
 त्रिपुष्करः १३१४२ उ. पूफायां १ भो. ३९ पुनस्तुलायां बु. ३५२  
 भ. १६१२ उ. ४६१५० या. चित्रार्थे १ यातः ३०  
 अष्टमीव्रत गोपाष्टमी, घ. पं. प्रवृत्ति ४११३ त्रिपुर्नस्मत्.  
 कुष्माण्ड ९ नययुगादि, (सकाचगुवने) विजावायः b  
 भ. ४४५९३. श्री ५ वडा महरानोशुण जन्म यावः  
 म. १३१७७ या. हरिवोधनी ११ व्रतं, तुलसीविव्रातः d  
 नोम प्रदोष व्रतं, रिद्धि, क्षेत्रे हृषिकेशाय यात्रा, मन्वादिः b  
 विष्णुवैकुण्ठ १४ घ. प. निवृत्तिः ७१६० (सकिणता पु. १०)  
 भ० १५८ ल. २८११ या. शिववैकुण्ठ १४ मन्वादि c

| ३० सु. मं. १ बु. वृ. शु. श. रा. | २७ |
|---------------------------------|----|
| का. ६ ४ ५ ६ ८ ५ ३               |    |
| १७ १६ १२ २८ २ ३ २३ २            |    |
| ग. ७ ४ ४ ५ ५ ३ १ ७ ६ ३९         |    |
| ७ ३३ १३ ५ ३ ५ ३ ५ २ २ ३९        |    |
| ३५ ६० २६ ६४ १३ ६१ ७ ३           |    |
| १९ १४ ८३ २५ १४ १२ ४ ११          |    |
| ३१ सु. मं. १ बु. वृ. शु. श. रा. |    |
| का. ६ ४ ६ ६ ८ ५ ३               |    |
| ७ ४ ७ १६ ७ ४ १० ७ ३ २           |    |
| ग. ५ ३६ १९ ८ ११ ५ ३ १७          |    |
| ७ ७ १० ५ ० ७ ७ ७ ७ २४           |    |
| ३० ३० ३० ८४ १३ ५८ ६ ३           |    |
| ७ ७ ३० २० ५ ४ ३ ५ ० ११          |    |



पूर्वादि दिशामा आवश्यकले गमनगर्दा खाने पदार्थ - पूर्वमा धूप, दधि, तिल, चावल, पश्चिम, साछा, उत्तरमा दुध, मूयादि वारमा-रविवार  
 सिकर्ती, सोमवार पायस, मंगलवार मद, बुधवार तातेको दूध, गुरुवार वही शुक्रवार काचो दूध, शनिवार तिल चामल, प्रतिपदादि तिथिमा प्रतिपदामा  
 अर्क पत्र द्वि० चौलानी, तृ. मा धूप, चतु. मा जौको विकार, पं. मा मूगी, प. मा सुतपात्री, स. मा मालपूवा, अ. मा विजौरा, न मा जल द मा  
 गोमूत्र, ए. मा युवाच, द्वा. मा पायस, १३ मा गुंड, च. मा. रगत, पू. मा. मूगी, खाई बाहेरी गमन गर्तु शुभछ । भयवस्तु भये खानू, अभयवस्तु भये हेतु.

१४ शु. ९, १८ बु. ७  
 म.मा.उ., बु.मा.उ.,  
 व.मा.उ., शु.मा.उ.प., श.मा.उ.



श्रीसाक १९०३ श्रीसंवत् २०३८ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (कच्छाया) पा० ३ मृ. पु. पूर्णचि. अनु. (नवम्बर ११) दक्षिणाग्रं जम्बुत. मेघन्तुः

| ग. वा. ति. घ. प. न. घ. प. यो. घ. प. क. घ. प. योगः    | चन्द्ररा. दि. मा. भू. उ. ता. | ० ४ भागः १ स्वाया १ सुका १ ननुपयामयके १०           |
|--|------------------------------|--|
| २७ वृ. १४९३३ म. ३३ ३० ४५ वा. २३ ०८ नम                | १४ ७ २६ ५१ ६३८ १             | धानक टे. हानधर्मा यावत्. पुष्पा ग. यम ४६           |
| २८ गृ. २४३३३ ग. ३१ ३५ प. २० १५ नै. १६ ३३ मित्र       | १४ ७ २६ ४८ ६३९ १३            | शु. प. वा. ग. ग. नी गम वा. नि. नि. नि. ४६          |
| प्र. २९ ज. ३३६४३ म. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० वज्र    | १५ १५ २६ ४४ ६४० १४           | म. १०१३३ उ. ३३ ४२ या.                              |
| ३० आ. ४३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० धाथ          | १५ १५ २६ ४४ ६४० १५           | एक या ३ भोगः ४७                                    |
| १ मा. ५३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० धाथ          | १५ १५ २६ ४४ ६४० १६           | वृद्धिकेज्जः २५१३० (मार्ग) सकान्तः                 |
| प्र. २ म. ६३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० वज्र     | १५ १५ २६ ४४ ६४० १७           | म. २२१३२ उ. ५०१४५ या.                              |
| ३ वृ. ७३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० रक्ष         | १५ १५ २६ ४४ ६४० १८           | अष्टमी व्रतम्, विशाखायां वधः ९                     |
| ४ गृ. ८३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० ममल          | १५ १५ २६ ४४ ६४० १९           | अनुराधायां रविः ४३ भैरवाष्टमी                      |
| ५ ज. ९३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० मिद्धि        | १५ १५ २६ ४४ ६४० २०           | म. ४४१५४ उ. पूर्वोक्ता वृधः ३०                     |
| ६ आ. १०३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० उत्पान        | १५ १५ २६ ४४ ६४० २१           | म. १४१५० या. श्री गुरुयेश्वरीयात्रा.               |
| ७ मा. ११३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० टमानम        | १५ १५ २६ ४४ ६४० २२           | उत्पत्तिका ११ व्रतम्, द्विपुकर. ११११ उ. पूर्वोक्ता |
| प्र. ८ ज. १२३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० समुद्रगर | १५ १५ २६ ४४ ६४० २३           | सोम प्रदीप व्रतम्,                                 |
| ९ म. १३३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० उ. वज         | १५ १५ २६ ४४ ६४० २४           | म. २११५२ उ. ५००३ या. वृद्धिक वृधः १३०              |
| १० ज. १४३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० धाता         | १५ १५ २६ ४४ ६४० २५           | वाचा १४, वतवीजारीपणम्, (वाचाव. पु. ज.)             |
| ११ वृ. १५३३३ ग. ३३ ४३ नि. १४ १५ व. १० ०० आनन्द       | १५ १५ २६ ४४ ६४० २६           | अनावास्या, दर्गथाद्रम् अनुराधायां वधः १५           |

अथ ब. वा. नमुदय्या कृष्णकर्मणि हमाद्रा-सुवर्णरत्नकाः नुन्य व. होमकं परिभाषा । मृगस्थली परिभाष्य पुनर्जन्म न विद्यते । मार्गशीर्षपक्षः - मार्गमास भर एकमवत (एक छ. कच्छा) व्रत एकवर्मा नागपूजा पशो अष्टमीमा गोपुत्राहारी वत लवण दत्त, धान्य-पत्र दत्त तत्र भोजनको माहात्म्य छ । नवम्याश्विन मन्त्र-प्राश्नयान् दधिमयवन नव विप्रामिमन्त्रितम् । गृहि-वा ब्राह्मणानुजा मदीय प्राश्नितम् । अथ प्राश्नसो विजटास्यदानमन्त्रः-रासायवट रवि मौल्य प्रियवादिनी । गृहाणाभ्यं मया दत्तं विजटायै नमोनमः । यमराज प्रामा-रितातका उमि यमराज भानिच्छ, यसमा अन्वाहारी भगमा निरःसज होटम् ।

|    |   |
|----|---|
| ११ | म |
| १२ | ५ |
| १३ | ३ |
| १४ | ३ |
| १५ | ३ |
| १६ | ३ |
| १७ | ३ |
| १८ | ३ |
| १९ | ३ |
| २० | ३ |
| २१ | ३ |
| २२ | ३ |
| २३ | ३ |
| २४ | ३ |
| २५ | ३ |
| २६ | ३ |
| २७ | ३ |
| २८ | ३ |
| २९ | ३ |
| ३० | ३ |

श्रीशक १९०३ श्रावण २०३८ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः (विहाराध्व) पा अनु. मू. उपा. पूभा र. मू. (नवम्बर ११ दिसम्बर १२) दक्षिणायन हेमन्तर्तुः

| ग. वा.      | ति. प.      | प. न.       | घ. प.     | क. घ. प. | योगाः  | चन्द्ररा.   | वि. मा. | सू. उ. ता. |
|-------------|-------------|-------------|-----------|----------|--------|-------------|---------|------------|
| १२ शु.      | १३६५४ अ.    | ३३ सु.      | २० १८ क.  | ४ १३     | रक्ष   | बू.         | २६ ८    | ६४७ २७     |
| १३ श.       | २४२ ४ ज्ये. | १३३ घृ.     | ३१ २७ घ.  | १ २९     | मुमल   | १३३ २६ ७    | ६४७ २८  | २८         |
| १४ आ.       | ३४६ ३८ मू.  | १५ ३८ शू.   | ३२ १९ नै. | १४ २१    | गिद्धि | घ.          | २६ ६    | ६४८ २९     |
| प्र. १५ मी. | ४५० १७ पू.  | २० ५५ ग.    | ३२ २३ न.  | १८ २७    | उत्पात | ३७ १ २६ ५   | ६४८ ३०  | ३०         |
| १६ मं.      | ५५२ ४७ उ.   | २५ १८ वृ.   | ३१ ४४ न.  | २१ ३२    | मानस   | म.          | २६ २    | ६४८ ३१     |
| १७ वृ.      | ६५४ ३४ अ.   | २८ २८ श्रु. | ३० ८ कौ.  | २३ २५    | छत्र   | ५९१ २४ २६ १ | ६४८ ३२  | ३२         |
| प्र. १८ वृ. | ७५४ १ ध.    | ३० २० व्या  | २७ ३२ ग.  | २४ २     | धीवस्त | कु.         | २६ ०    | ६४९ ३३     |
| १९ शु.      | ८५२ ४३ श.   | ३१ १ ह.     | २३ ५७ भ.  | २३ २२    | मौम्य  | कु.         | २५ ५८   | ६४९ ३४     |
| २० श.       | ९५० १७ पू.  | ३० ३३ व.    | १९ २५ व.  | २१ ३०    | काल    | १५१४० २५ ५७ | ६४९ ३५  | ३५         |
| २१ आ.       | १०४६ ४९ उ.  | २९ २ सि     | १४ २ नै.  | १८ ३३    | स्थिर  | मी.         | २५ ५५   | ६४९ ३६     |
| २२ मी.      | ११४२ ३० रे. | २६ ३७ व्या  | ७ ५२ व.   | १४ २९    | मातङ्ग | २६३७ २४ ५४  | ६५० ३७  | ३७         |
| प्र. २३ मं. | १२४७ ३० अ.  | २३ २६ व.    | ७ ४७ व.   | १० ०     | अमृत   | मे.         | २५ ५३   | ६५० ३८     |
| २४ वृ.      | १३३२ ० भ.   | १९ ४५ शि.   | ४६ १० कौ. | ५३ १४    | काण    | ३३४४ २९ ५१  | ६५० ३९  | ३९         |
| २५ वृ.      | १४२६ १२ क.  | १५ ४१ नि.   | ३८ १६ म.  | ५३ १४    | लुम्ब  | वृ.         | २५ ५०   | ६५० ४०     |
| २६ श.       | १५२० १६ रो. | ११ ०९ मा.   | ३० १८ वा. | ८७ २६    | मित्र  | ३९१२६ २५ ४८ | ६५१ ४१  | ४१         |

सूर्य नक्षत्र बाट दिन नक्षत्र तक गन्दा जो हुन्छ न्या संख्या-मू. ३वृ. ३शु. ३च. ३म. ३रा. ३के. ३ गर्दाजून ग्रहमा पछि त्यसदिनको आहुति त्यही ग्रहका मुखमा पछि पापग्रहका मुखमा पर्ने दिन होमाहुती न गर्नु । अग्निवास-होमगर्ने दिनको तिथि संख्यामा १ र बार पख्याजोडी ४ ले शेषगदा-०।३ शेष रहने पख्यामा १ शेष स्वर्गमा, २ शेष पातालमा, अग्नि को बाम हुन्छ । फल-पृथ्वी-सौख्य, स्वर्ग प्राणनाश, पातले अर्थनाश, यस्तो फल जान्नु । नित्यगरिने कर्ममा अग्निवासान पढेन । अथ बालक को दन्त जननफल-बालक को जन्म का पहिला महीनामा दात आए आफैनाश, दोस्रामा, मातृनाश, तैत्र मा बहिनी-नाश, चौथामा, मातृनाश पाचौ महीनामा ज्येष्ठ भ्रातृनाश, ६ महीना देखी एक वर्ष सम्म शुभ, दन्त सहित जन्मेको र माथिको पंक्ति बाट आएको ।

| ३४ मं.   | ३५ मं.       | ३६ मं.   | ३७ मं.       | ३८ मं.   | ३९ मं.       |
|----------|--------------|----------|--------------|----------|--------------|
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |

| ३५ मं.   | ३६ मं.       | ३७ मं.   | ३८ मं.       | ३९ मं.   | ४० मं.       |
|----------|--------------|----------|--------------|----------|--------------|
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |
| १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ | १५ १४-२७ | १० ८ २८ २६ ९ |

१८वृ. १०, १९मं. ६, २६वृ. ९

| १८वृ. | १९मं. | २०वृ. | २१मं. | २२वृ. | २३मं. |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| १८वृ. | १९मं. | २०वृ. | २१मं. | २२वृ. | २३मं. |
| १८वृ. | १९मं. | २०वृ. | २१मं. | २२वृ. | २३मं. |
| १८वृ. | १९मं. | २०वृ. | २१मं. | २२वृ. | २३मं. |

म. मा. उ. वृ. म. अ. वृ. मा. उ. शु. मा. उ. व. श. मा. उ.



श्रीवाके १९०३ श्रीसत्त् २०३८ पीष कृष्णपक्षः (चित्रागा) पा० मू. पु. ति. उफा. चि. मू. (दिसम्बर १२) दक्षिणायन-हेमन्तर्तुः

|      | ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो. | घ.    | प. | क.  | घ.  | प. | योगा.  | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता.   |   |                  |
|------|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-----|-------|----|-----|-----|----|--------|-----------|-----|-----|-----|----|---|---|------------------|
|      | २७ | ज.  | ११  | ४  | २८ | मू.   | ७  | २३ | जु. | २२    | ३१ | तै. | ४१  | ४३ | यज्ज   | मि.       | २५  | ४७  | ६   | ५१ | १२  | २ दिवसमत्तथा श्री ५ महेन्द्रजयंती अभिजिति शुक्रः १० |                  |
|      | २८ | आ.  | २   | ८  | ५८ | आ.    | ३  | ३३ | जु. | १४    | ५९ | व.  | ३६  | २८ | धवाक्ष | ४६        | ११  | २५  | ४६  | ६  | ५१  | १३ भ. ३६२८ उ. विपुलकर योग ३३३३ उ. ८१५८ या.          |                  |
| प्र० | २९ | सो. | ३   | ९  | ६८ | पु.   | ४  | ३३ | जु. | ७     | ५२ | व.  | ३१  | ४९ | धूम्र  | क.        | २५  | ४५  | ६   | ५१ | १४ भ. ३५६ या.   |   |                  |
|      | ३० | मं. | ५   | ५६ | १५ | ज.    | ५  | ५  | ३७  | ऐ.    | ४६ | ३३  | को. | २७ | ५७     | आनन्द     | ५१  | ३७  | २७  | ४३ | १५ मूलै १ धनुष्यकः ५४१२                                   |   |                  |
|      | १  | बु. | ६   | ५३ | ५० | म.    | ५  | ४  | ४७  | वि.   | ५० | २४  | ग.  | २५ | २      | चर        | मि. | २५  | ४१  | ६  | ५२  | १६ भ. ५३५० उ. (पीप) संक्रान्तिः, नेपाल संविधान २    |                  |
| प्र० | २  | बु. | ७   | ५२ | ३६ | पु.   | ५  | ५  | ४   | प्रो. | ४६ | १५  | म.  | २३ | १२     | गद        | मि. | २५  | ४०  | ६  | ५२  | १७ भ. २३१३ या.                                      |                  |
|      | ३  | शु. | ८   | ५२ | ३६ | व.    | ५  | ६  | ३३  | आ.    | ४३ | ४   | वा. | २२ | ३५     | शुभ       | १०  | २६  | २५  | ३८ | ६   | ५३  | १८ अष्टमी व्रतम् |
|      | ४  | श.  | ९   | ५३ | ५३ | ह.    | ५  | ९  | २०  | सो.   | ४० | ५२  | तै. | २३ | १४     | मृत्यु    | कं. | २५  | ३७  | ६  | ५३  | १९ उफायां ४ भौमः २ पूपायां बुधः ३१                  |                  |
|      | ५  | आ.  | १०  | ५६ | २६ | चि.   | ६० | ०  | १०  | ३९    | ४१ | व.  | २५  | ९  | पद्म   | ३१        | १८  | २५  | ३५  | ६  | ५३  | २० भ. २११९ उ. ५६२६ या. श्री ५ महाराजाधिराज ८        |                  |
|      | ६  | सो. | ११  | ६० | ०  | चि.   | ३  | १६ | अ.  | ३९    | २० | व.  | २८  | १६ | मृदगर  | तु.       | २५  | ३४  | ६   | ५३ | २१ पश्चिमोदयो बुधः ३१                                     |   |                  |
|      | ७  | मं. | ११  | ०  | ७  | स्वा. | ८  | ११ | सु. | ३९    | ४८ | को. | ३२  | २६ | धवज    | ५७        | ४४  | २५  | ३४  | ६  | ५३  | २२ सफला ११ व्रतम् मिथुने राहुः धनुषि केतुः ४७१२०    |                  |
| प्र० | ८  | बु. | १२  | ४  | ४५ | वि.   | १४ | १३ | धु. | ४०    | ४६ | ग.  | ३७  | २२ | धाता   | वृ.       | २५  | ३४  | ६   | ५३ | २३ प्रदोष व्रतम्, वक्राशुक्रः १ ० मकरे मायनाकः १०         |   |                  |
|      | ९  | बु. | १३  | ९  | ५९ | अ.    | २० | ३७ | श.  | ४२    | ६  | म.  | ४२  | ४२ | आनन्द  | वृ.       | २५  | ३५  | ६   | ५३ | २४ भ. १५१९ उ. ४२४२ या. (दिर्घाचह्नेपुजा)                  |   |                  |
|      | १० | जु. | १४  | १५ | २१ | जो.   | २७ | ११ | ग.  | ४३    | २८ | च.  | ४८  | १  | चर     | २७        | ११  | २५  | ३७  | ६  | ५३  | २५ ८ शुभवर्गमिर्बुध्दिः, (विर्णापुजा)               |                  |
|      | ११ | ज.  | १५  | २० | ३४ | म.    | ३३ | २५ | व.  | ४४    | २२ | कि. | ५०  | ५४ | गद     | ध.        | २५  | ३१  | ६   | ५३ | २६ वक्राशुक्रम्, सप्तमनादो २० पीपी ३० हस्तार्धे १ भौमः ४३ |   |                  |

a दिवसस्तथा श्री ५ महेन्द्रजयन्तो अभिजिति शुक्रः १०  
 भ. ३६२८ उ. त्रिपुण्डर योग ३१३३ उ. ८१५८ या.  
 भ. ३१५६ या.  
 मूले १ घनुष्यकः ५४१२  
 म. ५३१५० उ. (पौष) संक्रान्तिः, नेपाल संविधान a  
 भ. २३१३३ या.  
 अष्टमी व्रतम्  
 उफायां ४ भौमः २ पूपायां बुधः ३१  
 भ. २११९ उ. ५६१२६ या. श्री ५ महाराजाधिराज d  
 पश्चिमोदयो बुधः ३१  
 सफला ११ अतम् म्थुने राहुः घनुषि केतुः ४७१११n  
 प्रदोष ब्रह्म, वक्रोक्तः १ n मकरे मायनाकोः १०  
 भ. ११५९ उ. ४२१४२ या. (विष्णोचहेतुजा)  
 वृ. शुभवर्षाभिर्बुधः, (विष्णोपजा)  
 वक्रोक्तः ११ मकरे मायनाकोः १०

| ३६ | सू.   | मं. | वृ. | वृ. | श. | श.  | रा. |
|----|---|-----|-----|-----|----|-----|-----|
| २९ | २८  | ४   | ४   | ११  | ६  | २७  | ०   |
| २९ | २९  | ५   | ९   | ४   | १  | १९  | २६  |
| २९ | ४३  | २   | ७   | १०  | २९ | ०   | ९   |
| ३४ | ६१  | २६  | १०  | ४   | १० | २४  | ४   |
| ११ | ०   | ७   | १२  | ५   | ९  | ६   | २८  |
| ३७ | सू. <th>मं.</th> <th>वृ.</th> <th>वृ.</th> <th>श.</th> <th>श.</th> <th>रा.</th> | मं. | वृ. | वृ. | श. | श.  | रा. |
| ५  | ८   | ५   | ८   | ६   | ९  | ५   | ३   |
| ६  | ५   | ७   | १६  | १२  | ७  | २७  | ०   |
| १७ | ४७  | ४१  | ४३  | १७  | ५५ | ५१  | ३   |
| २२ | ५५  | ५६  | ५१  | ४१  | ३५ | १०  | ५४  |
| ३३ | ६१  | २१  | ९९  | १०  | १५ | ४   | ३   |
| ४९ | १६  | ५२  | ३४  | १६  | १८ | ४   | ११  |
| ३० | सू.   | ९   | ७   | रा. | ३  | के. | ९   |
| ९  | वृ.   | ७   | ७   | वृ. | ७  | म.  | ७   |
| १० | शु.   | ८   | ८   | शु. | ८  | म.  | ८   |
| ११ | ११  | ५   | ५   | ११  | ५  | ११  | ५   |
| १२ | २   | २   | २   | १२  | २  | १२  | २   |
| १३ | १   | १   | १   | १३  | १  | १३  | १   |
| म. | रा.   | उ.  | वृ. | मा. | उ. | वृ. | मा. |
| ७  | ८   | ७   | ७   | ७   | ७  | ७   | ७   |

अथ प्रश्न विचार प्रश्न समयको विचार नक्षत्र प्रहुर र शत्रुको संख्या जानी नसक्दा १० ले सगु ७ ले भाग दिदा १ शेष रहे जर्मितमा  
 ३६ को. २ शेष मङ्गमा, ३ शेष जलमा ४ शेष दीचमा, ५ शेष अश्लेषमा, ६ शेष मीनमा, ७ शेष मीनमा, ८ शेष मीनमा, ९ शेष मीनमा, १० शेष मीनमा होला भति जान्नु ।  
 अथ विपवर्षाणि—मेघमक्रान्तिबाट ७ महीना मेघ विद्वन्, ४ महीना मेघ विद्वन्, ३ महीना मेघ विद्वन्, २ महीना मेघ विद्वन्, १ महीना मेघ विद्वन्  
 ज्ञानियत आवश्यक न मेघमक्रान्तिबाट ७ महीना मेघ विद्वन्, ४ महीना मेघ विद्वन्, ३ महीना मेघ विद्वन्, २ महीना मेघ विद्वन्, १ महीना मेघ विद्वन्  
 वृ. भागभोजन गरौं थारोको रित्त राम रहल ।

श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ पोषशुक्लपक्षः (पोहेलाश्व) पा. उषा. पूभा. उभा. मृ. आ. पु. (दिसम्बर १२ जनवरी १ सन् ८२) दक्षि-हेमन्तर्तुः

| ग. वा. ति. | घ. प. न. | घ. प. यो. घ. प. क. | घ. प. योगा.  | चन्द्ररा. | दि. मा. | सू. उ. ता. |
|------------|----------|--------------------|--------------|-----------|---------|------------|
| १२ आ.      | १२५११    | ३८५६ ध्रु. ४४१४ वा | ५६५९ शुभ     | ५५५५      | २५४१    | ६५२ २७     |
| १३ सो.     | २२८४७    | ४३३४ व्या ४४२४ तै  | ६०० मृत्यु   | म.        | २५४२    | ६५२ २८     |
| १४ मं.     | ३३११३    | ४७४४ ह ४३८ तै      | ०१ लुम्ब     | म.        | २५४४    | ६५१ २९     |
| १५ बु.     | ४३२२५    | ४९१४ व. ४०५२ व.    | १४९ मित्र    | १८१९      | २५४५    | ६५१ ३०     |
| १६ वृ.     | ५३२२०    | ५०१३ लि. ३७३७ व.   | २२२ वज्र     | कुं.      | २५४७    | ६५१ ३१     |
| १७ शु.     | ६३०५९    | ५०१३ व्य. ३३२६ कौ. | ३३३ ध्वांक्ष | ३५४४      | २५४८    | ६५१ १      |
| १८ श.      | ७२८२९    | ४८४४ व. ३८१९ भा.   | ५६४४ भूझ     | मी.       | २५४९    | ६५० २      |
| १९ आ.      | ८२४५९    | ४६३२ प. ३२२४ वा.   | ५२४८ वर्द्ध  | ४६३२      | २५५१    | ६५० ३      |
| २० सो.     | ९२०३७    | ४३३८ जि. १५४८ तै.  | ४८७ रक्ष     | मे.       | २५५२    | ६५० ४      |
| २१ मं.     | १०१५३७   | ३९५७ मि. ८४१४ व.   | ४२५२ मूल     | ५३५७      | २५५४    | ६४९ ५      |
| २२ बु.     | १११०७    | ३५५८ मा. ४३४३ व.   | ३७१३ सिद्धि  | वृ.       | २५५५    | ६४९ ६      |
| २३ वृ.     | १२१४३६   | ३१४९ जु. ४५२५ कौ.  | ३१२२ उत्पात  | ५१४४      | २५५६    | ६४९ ७      |
| २४ शु.     | १४५२४०   | २७४० ब्र. २७३३ ग.  | २५३३ मानस    | मि.       | २५५८    | ६४८ ८      |
| २५ श.      | १५४७१४   | २३४७ मे. २९५७ भा.  | १९५७ मङ्गर   | मि.       | २५५९    | ६४८ ९      |

| ३८ पू. मं. | ३९ बु.         | ४० श.   | ४१ रा. |
|------------|----------------|---------|--------|
| १३ १२ १०   | २७ १३          | ८ २८ २९ |        |
| १४ ५७ ४६   | ४१ २३          | ८ १७ ४१ |        |
| २३ ६१ २५   | २१ ९ ७         | ३३ ३९   |        |
| ४० २० ५    | २१ २० ५२ २० ११ |         |        |

| ३९ बु. मं. | ४० श.          | ४१ रा.  |
|------------|----------------|---------|
| १३ १२ १०   | २७ १३          | ८ २८ २९ |
| १४ ५७ ४६   | ४१ २३          | ८ १७ ४१ |
| २३ ६१ २५   | २१ ९ ७         | ३३ ३९   |
| ४० २० ५    | २१ २० ५२ २० ११ |         |

मं. न. उ. वृ. मा. उ. वृ. मा. उ. वृ. मा. उ.

वृषा अधिक फल लागे चामल पूरा हुन्छ, जामुन अधिक फल्यो भने तिल मास अधिक, शिरीष अधिक फले कागनु अधिक, कुन्दका फल अधिक हुवा कपास अधिक, चुत्रा अधिक फल्यो भने हागीमस्य अधिक, बदरी (बयर) अधिक फले गहन अधिक, कुश दुबो अधिक फैलाये उखु रान्नो हँछ नीम को फल अधिक लागे संवत्सर असल हुन्छ, जमी खयरमा अधिक फल लागे अनिकाल पर्छ, आम अधिक फले प्रजालाई कल्याण हुन्छ भलायोघरे फल्यो भने रोग को वृद्धि हुन्छ, करञ्जको फल अधिक लागे मूँग को खेती असल हुन्छ इत्यादि। आवणसोमवारमा शिवव्रत गर्नाले विद्याधन पुत्रादि सिन्दछ।

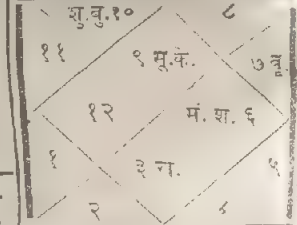


श्रीशके १६०३ श्रीसंवत् २०३८ माघ कृष्णपक्षः (पोहेलागा) पा.पु.ह.चि.मू.उषा.अभि.श्र. (जनवरी १) दक्षि-हेमन्तर्तुः-उत्तरा-शिशिरर्तुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प.    | न.    | घ. | प.    | यो.  | घ. | प.  | क.  | घ.   | प.    | योगः     | चन्द्ररा. | वि.   | मा. | सू. | उ. | ता.   | मं.मा.उ.वृ.७व.१०अ.,वृ.मा.उ.,शु.व.५अ.१०उ.पु.d       |   |                          |  |
|----|-----|-----|----|-------|-------|----|-------|------|----|-----|-----|------|-------|----------|-----------|-------|-----|-----|----|---|--|---|--------------------------|--|
| २६ | आ.  | १४  | २२ | पु.   | २०    | १८ | वै.   | २२   | ४३ | वा. | १४  | ४७   | ध्वज  | ६१०      | २६        | १     | ६   | ४८  | १० | उषायां रविः ५ न                                   | dश.मा.उ.   |   |                          |  |
| २७ | सो. | २३  | ८  | ति.   | १७    | २८ | वि.   | १५   | ५२ | तै. | १०  | १४   | घाता  | क.       | २६        | २     | ६   | ४८  | ११ | श्रीपृथ्वीजयंतौ                                   | ८ रु रु (रिडी) क्षेत्रे त्रिविने मेला              |   |                          |  |
| २८ | मं. | ३३  | ४८ | अ.    | १५    | २५ | प्रो. | ९    | ५२ | व.  | ६   | २८   | आनन्द | १५१      | २५        | ३     | ६   | ४८  | १२ | भ. ६।२८ उ. ३४।४ न या                              |  |   |                          |  |
| २९ | बु. | ४३  | ३१ | म.    | १४    | २१ | आ.    | ४    | ३५ | व.  | ३   | ३९   | चर    | सि.      | २६        | ५     | ६   | ४७  | १३ | हस्तक्षेत्रे भौमः १४                              | b शंखमूलमनानं (धोचाकुसुतट्टु) c                    |   |                          |  |
| १  | बु. | ५३  | १२ | पु.   | १४    | २३ | सो.   | ४    | ३५ | व.  | १   | ५७   | गद    | २९।४१    | २६        | ६     | ६   | ४७  | १४ | मकरेक्षः १३।३१ (माघ) संप्रान्तिः उत्तरायणपारंभः b |  |   |                          |  |
| २  | गु. | ६३  | १३ | उ.    | १५    | ३७ | अ.    | ५    | ४  | ९   | ग.  | १    | २८    | शुभ      | क.        | २६    | ७   | ६   | ४७ | १५  | भ. ३१।३२ उ.  | a शुक्रः १६।४६                                      |                          |  |
| ३  | श.  | ७३  | ५९ | ह.    | १८    | ६  | मु.   | ५    | २  | ३८  | म.  | २    | १५    | मृत्यु   | ४९।५७     | २६    | ८   | ६   | ४७ | १६  | भ. २।१५ याः द्विपुष्करः १ न।६ उ. ३२।५९ या. धनुषि a |   |                          |  |
| ४  | वा. | ८३  | ५४ | चि.   | २१    | ४९ | धृ.   | ५    | २  | ४   | वा. | ४    | २०    | पद्म     | तु.       | २६    | ९   | ६   | ४६ | १७  | बध्मे भौमतम्                                       | r मेला हस्तक्षेत्रे भौमः १०                         |                          |  |
| ५  | सो. | ९३  | ९८ | स्वा. | २६    | ३७ | बु.   | ५    | २  | १८  | तै. | ७    | ३४    | छत्र     | तु.       | २६    | १०  | ६   | ४६ | १८  | पश्चिमास्तः शुक्रः १३                              | g मेला आर्यघट्टे माधव नारायण r                      |                          |  |
| ६  | मं. | १०  | ४४ | ११    | वि.   | ३२ | २५    | गं.  | ५  | ३   | ९   | ११   | ४९    | श्रीवत्स | १५।५८     | २६    | १२  | ६   | ४६ | १९  | म. ११।४९ उ. ४४।११ या.                              | c ३० वर्गो बुधः ३३                                  |                          |  |
| ७  | बु. | ११  | ४९ | २८    | अ.    | ३८ | ४२    | वृ.  | ५  | ४   | २५  | ब.   | १६    | ४९       | सौम्य     | वृ.   | २६  | १५  | ६  | ४५  | २०   | पटतिला ११ भ्रतम् अभिजिति रविः ४५ कुम्भे सायनाक्षः c |                          |  |
| ८  | वृ. | १२  | ५४ | ५५    | ज्ये. | ४५ | १८    | धृ.  | ५  | ५   | ४९  | कौ.  | २२    | ११       | काल       | ४५।१८ | २६  | १८  | ६  | ४४  | २१   | पूषायां शुक्र ५६                                    | h ४७ पूर्वोदय शुक्रः २९  |  |
| ९  | श.  | १३  | ६० | ०     | मू.   | ५१ | ४०    | व्या | ५  | ६   | ५६  | ग.   | २७    | २९       | स्थिर     | घ.    | २६  | २१  | ६  | ४४  | २२   | प्रदोष भ्रतम् स्वात्या ४ गुरुः १                    |                          |  |
| १० | श.  | १३  | ०  | ४     | पु.   | ५७ | २४    | ह.   | ५  | ७   | ३६  | म.   | ३२    | १८       | मातङ्ग    | घ.    | २६  | २४  | ६  | ४३  | २३   | भ. ०।४ उ. ३२।१८ या., (लैचह्ने) पश्चिमास्तां बुधः h  |                          |  |
| ११ | आ.  | १४  | ४३ | ३     | ६०    | ०  | ५७    | ३१   | च. | ३६  | १८  | अमृत | १३१   | ३७       | म.        | २६    | २७  | ६   | ४३ | २४  | दर्श आढम् श्रवणे रविः १                            | अभिजिन्निवृत्ति रविः ५३                             |                          |  |
| १२ | सो. | ३०  | ८  | ४     | उ.    | २१ | ५     | सि.  | ५  | ६   | ३७  | कि.  | ३९    | १३       | काण       | म.    | २६  | ३०  | ६  | ४२  | २५   | स्तानादानादौ भौमवती ३०                              | मुटवलक्षेत्रे त्रिवेणी g |  |

अथ प्रथम रजोवतिनारीणां फलम् । पहिला रजस्वला हुँदा शुभकालः वै. ज्ये. आ. आ श्व. मार्ग. माघ. फा. मासशुक्लपक्ष, १२।३।१।३।-१०।११।१२।१५ तिथि श्वेत वस्त्र सो. बु. शु. बार. अ. घ. श. मू. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. ति. ३ उत्तरा रो. स्वा. नक्षत्र, २।३।१।४६।७।१।१२ लग्न इनमा रजस्वला हुनु शुभछ । कृष्णपक्षे राश्री भद्रायां संक्रान्ति दिने रोमे वैधृती व्यतीपाते रविभौम शनिवारेषु ज्ये. आर्द्रा. मा अशुभत त्परिहारः ।

| शु. | व. | शु. | श. | रा. |
|-----|----|-----|----|-----|
| १०  | ८  | ५   | ९  | ५   |
| २७  | २७ | १६  | १५ | २८  |
| १६  | ४  | ३७  | २५ | ५६  |
| २४  | २७ | ५६  | १५ | ३७  |
| ३३  | ६१ | २९  | ५९ | ७२  |
| ४०  | १८ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ४९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५०  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ५९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६०  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ६९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७०  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ७९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८०  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ८९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९०  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९१  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९२  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९३  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९४  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९५  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९६  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९७  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९८  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| ९९  | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |
| १०० | ५५ | ३५  | ४२ | ३५  |



१ सु. १०, ३ शु. ९

श्री शाके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ माघशुक्लपक्षः (सिलाख) पा०श्र.पू.भा.उ.भा.कृ.मृ.पु.९ (जनवरी १ फरवरी २) उत्तरायणं शिशिरर्तुः

| ग.     | वा. | ति. | घ. | प.   | न. | घ. | प.   | यो.   | घ. | प.  | क.  | घ. | प.      | योगः     | चन्द्ररा. | दि. मा. | सू. उ. ता. |
|--------|-----|-----|----|------|----|----|------|-------|----|-----|-----|----|---------|----------|-----------|---------|------------|
| १३ मं. | १   | १०  | २३ | श्र. | ६  | ३  | व्य. | ५४    | ४४ | वा. | ४०  | ५५ | लुग्व   | ३७       | १८        | २६      | ३४         |
| १४ बु. | २   | ११  | २८ | घ.   | ८  | ३  | व.   | ५१    | ५१ | तै. | ४१  | २२ | मित्र   | कु.      | २६        | २८      | ६४०        |
| १५ वृ. | ३   | ११  | १७ | श.   | ९  | ५  | प.   | ४८    | ०  | व.  | ४०  | ३३ | वज्र    | ५४       | ५२        | २६      | ४१         |
| १६ शु. | ४   | ९   | ४९ | पु.  | १  | ५  | शि.  | ४३    | १४ | व.  | ३८  | ३१ | ध्वाक्ष | मी.      | २६        | ४४      | ६३९        |
| १७ श.  | ५   | ७   | १४ | उ.   | ८  | ५  | सि.  | ३७    | ३६ | कौ. | ३५  | २६ | धूम्र   | मी.      | २६        | ४८      | ६३८        |
| १८ आ.  | ६   | ६   | ३३ | रे.  | ६  | ५  | सा.  | ३१    | १६ | ग.  | ३१  | २६ | वह्नि   | ६        | ५२        | २६      | ५१         |
| १९ ती. | ८   | ५   | ४१ | अ.   | ४  | ३  | शु.  | २४    | २० | भा. | २६  | ४१ | रक्ष    | मे.      | २६        | ५४      | ६३७        |
| २० मं. | ९   | ४   | ३७ | भा.  | ७  | ६  | ३३   | शु.   | १६ | ५७  | वा. | २१ | २२      | मुसल     | १४        | ४०      | ६३७        |
| २१ बु. | १०  | ४   | ४८ | रो.  | ५  | २  | ३३   | व.    | ९  | १८  | तै. | १५ | ४२      | शुभ      | वृ.       | २६      | ५९         |
| २२ वृ. | ११  | ३   | ५२ | मृ.  | ४  | ८  | ३१   | रे.   | ४५ | ५५  | व.  | ९  | ५०      | मृत्यु   | २०        | ३५      | २७         |
| २३ शु. | १२  | ३   | ८  | आ.   | ४  | ४  | ३६   | वि.   | ४५ | ५५  | व.  | ९  | ५०      | पद्म     | मि.       | २७      | ६          |
| २४ श.  | १३  | २   | ५  | पु.  | ४  | १  | २    | प्रो. | ३८ | ३४  | ग.  | ५३ | १८      | छत्र     | २६        | ५५      | २७         |
| २५ आ.  | १४  | २   | ०  | ति.  | ३  | ८  | ३    | आ.    | ३१ | ४१  | म.  | ४८ | ४७      | श्रीवत्स | क.        | २७      | १३         |
| २६ सो. | १५  | १   | ६  | अ.   | ३  | ५  | ५०   | मौ.   | २५ | २४  | वा. | ४५ | ४       | सौम्य    | ३५        | ५०      | २७         |

b रथ उ मन्वादि, (लगला चुपक)

चन्द्रोदयः घ. पं. प्रवृत्ति ३७।१८ द्विपु. १०।२३ उ.

c यात्रा (स्नानपूर्ति) पूर्वोदयो बुधः ५० (सिपुह्नी)

म. ४०।३३ उ. छायादर्शनम्, मार्गो युक्तः २०

म. १।४९ या.

श्रीपंचमी, वसंत श्रवणं, सरस्वती जयंती.

म. ५९।१३ उ. घ. प. निवृत्तिः ६।५२ अचला ७b

म. २६।४१ या. अ. व्रतम्, भीष्माष्टमी, (फरवरी)

द्रोण ९ वक्त्री शनिः १३ पुनरुयायां बुधः ६

शरत् १० पुनरभिजिति बुधः ३ अ२ ता. २८

म. १।५० उ. ३६।५२ या. भीमा ११ व्रतम्

भीष्म १२ (मन्याहुली) वदुमाध्यावा रा रविः ६

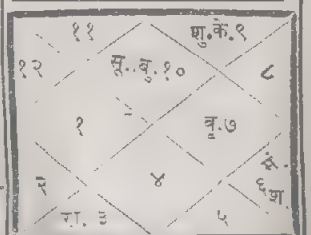
शनि प्रदोष व्रतम्, सौभाग्य शूर्पदानम्, घनिष्ठायां र

म. २०।५२ उ. ४८।४७ या. पूर्णिमा व्रतम् श्रीपशुपतेः

स्वस्थानी व्रत समाप्तिः माघस्नान समाप्तिः माघ c

| ४३ | सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| १९ | १८  | २१  | १२  | १७  | २३  | २९ | २७  |
| २१ | ४३  | ३०  | ८   | ३८  | ३०  | १८ | ५०  |
| २३ | ६०  | ११  | ५०  | ४   | ११  | ०  | ३   |
| ५० | ५९  | ३   | ४३  | ४६  | ५९  | २२ | ११  |

| ४४ | सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| २६ | २५  | ००  | ७   | १८  | २३  | २९ | २७  |
| २८ | ४०  | २४  | ३९  | ६   | ३१  | १३ | २८  |
| ३० | ४६  | ०   | १३  | ३६  | ५६  | ५७ | ४   |
| ३४ | ६०  | ६   | १८  | २   | ११  | १  | ३   |
| २५ | १   | ९   | ४०  | ५८  | ५४  | ८  | ११  |



म.मा.उ., वृ.व.२६उ.,  
वृ.मा.उ., शु.२५मा.उ.पु.,  
श.२०व.उ.

अथ श्रीपंचम्यां हलप्रवाहो हलपूजा चेति शिष्टाचारः । सरस्वतीपूजा वसन्तोत्सवं च कारयेत् । सप्तमीरथ सप्तम्यां गंगा स्नान महाफलम् माघमासे  
नियमाः—भूमिशायी प्रातः प्रयाग वा गंगानदीतलाव अन्य तमे पुण्यतीर्थे प्रयागस्मरणेन स्नानं तन्मन्त्रः दुःख दारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोः स्तोत्रपाठाय च ।  
प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम् । सूर्यार्घ्यदानम्—सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम । स्वतेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा ।  
माघे—तिल स्नानं तिल तर्पणं तिल जलपानं तिलहोमं तिल दानं तिल भक्षणं भूमिशायी ब्रह्मचर्यं पालनं मूलकपरित्यागञ्च कृत्वा इन्धन  
(दाउराकोइला) कंबल, उपानह वस्त्राणि तैल काशपस (रईसीरक) सुवर्ण अन्नञ्च दानान्महाफलमिति ।



श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ फाल्गुन कृष्णपक्षः (सिल्लागा) पा० ह.चि. वि. मू. उषा. श. (फरवरी २) उत्तरायण-शिशिरर्तुः

| ग.         | वा. | ति. | घ. | प.    | न. | घ. | प.    | यो. | घ. | प.     | क.   | घ. | प.      | योगः | चन्द्रा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता.  |                                       |
|------------|-----|-----|----|-------|----|----|-------|-----|----|--------|------|----|---------|------|----------|-----|-----|-----|----|--|---------------------------------------|
| २७मं.      | १   | १३  | २६ | म.    | ३४ | ३२ | शो.   | १९  | ५२ | तै.    | ४२   | २० | काल     | सि.  | २७       | २०  | ६   | ३२  | ९  |  |                                       |
| २८बु.      | २   | ११  | १४ | पू.   | ३४ | २२ | अ.    | १५  | १० | व.     | ४०   | ४३ | स्थिर   | ४९   | ३६       | २७  | २४  | ६   | ३१ | १०   |                                       |
| प्र. २९वृ. | ३   | १०  | १२ | उ.    | ३५ | १८ | सु.   | ११  | २४ | व.     | ४०   | १८ | मातृ    | कं.  | २७       | २७  | ६   | ३१  | ११ | म. ४०।४३ उ. p मीनेसायनार्कः ५९।५९                        |                                       |
| १शु.       | ४   | १०  | २५ | ह.    | ३७ | ३१ | धू.   | ८   | ३७ | को.    | ४१   | ११ | अमृत    | कं.  | २७       | ३१  | ६   | ३०  | १२ | म. १०।१२ या. पुनर्वसुस्याभिजितित्यागः ४४                 |                                       |
| २श.        | ५   | ११  | ५७ | त्रि. | ४० | ५८ | शु.   | ६   | ४९ | ग.     | ४३   | १९ | काण     | २१   | ४२       | २७  | ३४  | ६   | २९ | कुम्भेऽर्कः ३९।४९ (फाल्गुन) संक्रान्तिः मार्गं बुधः ४    |                                       |
| ३आ.        | ६   | १४  | ४२ | स्वा. | ४५ | ३३ | गं.   | ६   | ०  | म.     | ४६   | ३७ | लुम्ब   | तु.  | २७       | ३८  | ६   | २८  | १४ | अभिजितिवुधः ८ y (शिलाचह्नेपूजा) घ.पं.प्रवृत्तिः ५६।५६    |                                       |
| ४सो.       | ७   | १८  | ३३ | वि.   | ५१ | १० | वृ.   | ६   | १  | बा.    | ५०   | ५४ | मित्र   | ३४   | ४६       | २७  | ४५  | ६   | २८ | म. १४।४२ उ. ४६।३७ या. त्रिपुष्करः ४५।३३ उ.               |                                       |
| ५मं.       | ८   | २३  | १६ | अ.    | ५७ | २३ | घु.   | ६   | ४६ | तै.    | ५५   | ५४ | वज्र    | वृ.  | २७       | ४६  | ६   | २७  | १६ | अष्टमी व्रतम् h तित्यागः ५६, श्रवणे बुधः २"              |                                       |
| ६बु.       | ९   | २८  | ३३ | ज्ये. | ६० | ०  | व्या  | ७   | ५८ | व.     | ६०   | ०  | ध्वाक्ष | वृ.  | २७       | ४९  | ६   | २६  | १७ | c भौमः ५९।५१   |                                       |
| ७वृ.       | १०  | ३३  | ५७ | ज्ये. | ३५ | ८  | ह.    | ९   | २७ | व.     | १    | १५ | काण     | ३५   | ८        | २७  | ५३  | ६   | २५ | a प्रजातन्त्र दिवसस्तथा श्री ५ त्रिभुवन जयंती p          |                                       |
| ८शु.       | ११  | ३९  | २  | मू.   | १० | २६ | व.    | १०  | ४५ | व.     | ६    | २९ | स्थिर   | घ.   | २७       | ५६  | ६   | २५  | १९ | म. ११।१५ उ. ३३।५७ या. उपायां शुक्रः २६ नेपालa            |                                       |
| प्र. ९श.   | १२  | ४३  | २४ | पू.   | १६ | २२ | सि.   | ११  | ३९ | कौ.    | ११   | १३ | मातृ    | कं.  | २७       | ५६  | ६   | २४  | २० | विजया ११ व्रतम् शतभिषायां रविः १५ वक्री-c                |                                       |
| १०आ.       | १३  | ४६  | ४७ | उ.    | २१ | २६ | व्या. | ११  | ५२ | ग.     | १५   | ५  | अमृत    | म.   | २८       | ४   | ६   | २३  | २१ | त्रिपुष्कर १६।२२ उ. ४३।२४ या. "बुधस्याभिजि-h             |                                       |
| ११सो.      | १४  | ४८  | ५८ | श्र.  | २५ | ३२ | व.    | ११  | १८ | श.     | १७   | ५२ | सिद्धि  | ५६   | ५६       | २८  | ८   | ६   | २२ | म. ४६।४७ उ. प्रदोषव्रतम् g ४ केतुः ४१                    |                                       |
| १२मं.      | १५  | ४९  | ५५ | घ.    | २८ | २१ | प.    | १४  | २६ | उत्पात | कुं. | २८ | १२      | ६    | २२       | २३  | ८   | ६   | २२ | २३   | म. १७।५२ या. महाशिवरात्रि १४ व्रतम् y |
|            |     |     |    |       |    |    |       |     |    |        |      |    |         |      |          |     |     |     |    | दर्शश्राद्धम्, द्विपश्युगादि. पुनर्वसौ २ राहुः पूषायां g |                                       |

म. ४०४३ उ. p मीनेसायनार्कः ५९।५९  
 म. १०।१२ या. पुनर्वसुस्यामिजितित्यागः ४४  
 कुम्भेऽर्कः ३९।४९ (फाल्गुन) संक्रान्तिः मार्गी बुधः ४  
 अमिजितिवुधः ८ y (शिलाचह्नेपूजा) घ.पं. प्रवृत्तिः ५६।५६  
 म. १४।४२ उ. ४६।३७ या. त्रिपुष्करः ४५।३३ उ.  
 अष्टमी व्रतम् h तित्यागः ५६, श्रवणे बुधः २  
 c भौमः ५९।५९  
 a प्रजातन्त्र दिवसस्तथा श्री ५ त्रिभुवन जयंती p  
 म. १।१५ उ. ३३।५७ या. उपायां शुक्रः २६ नेपाल a  
 विजया ११ व्रतम् दातृभिषायां रविः १५ वक्रो-c  
 त्रिपुष्कर १६।२२ उ. ४३।२४ या. "बुधस्याभिजि-h  
 म. ४६।४७ उ. प्रदोषव्रतम् g ४ केतुः ४१  
 म. १७।५२ या. महाशिवरात्रि १४ व्रतम् y  
 दशश्राद्धम्, द्वापरयुगादि. पुनर्वसो २ राहुः पूपायां g

| ४५ सू.मं. | व. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----------|----|-----|-----|----|-----|
| का. १०।५  | १  | ६   | ८   | ५  | ५   |
| ४. २२२    | ७  | १८  | २५  | २९ | २७  |
| ग. ५६।४५  | ४  | २०  | २३  | ४  | ५   |
| सु. २३३   | ३४ | ५३  | ६६  | २३ | ८८  |
| ३४६०      | २  | २६  | १०५ | १  | ३   |
| १३४१४२    | ३३ | २३  | ५७  | ११ | ११  |

| १ सू. ११ | वृ. १० | वृ. ० | वृ. १ |
|----------|--------|-------|-------|
| १२       | १०     | ०     | १     |
| १        | ११     | ८     | १     |
| २        | ५      | ५     | १     |
| रा. ३    | ४      | ५     | १     |
| ४        | ५      | ५     | १     |

अथ मूलादिनक्षत्रे जनन फलम्—मूलस्य प्रथमे पादे पिता नाशः द्वितीये पादे जननी, तृतीये पादे धन नाशः, चतुर्थे पादे शुभ स्यात् । अश्लेषायाः प्रथमे पादे शुभं द्वितीये धनं तृतीये पादे जननी चतुर्थे पितरंहन्ति। मूलाश्लेषयोः चतुर्थप्रथम पादजनानां मित्रानामनिष्टमिति मतान्तरम्, अतः सर्वेषां शान्तिकं विधेयम्। अशुक्लमूलम् ज्येष्ठान्त्य द्विघटी मूलादि द्विघटी पर्यन्तं अभुक्लमूलं भवति अत्रोदभवबालकस्य मुखं पित्रा अष्टवर्षं पर्यन्तं न दर्शनीयम्। अथ मूलनिवासस्तस्य फलम्—आषाढमास आश्विन माघेषु मूल स्वर्गं फलं राज्यलाभः, श्रावण कार्तिक पौष चैत्रेषु मूलमर्त्यलोके फलं शून्यम्, वैशाख ज्येष्ठमार्ग फाल्गुनेषु मूलं पाताले फलं धनागमम्। वरवधूनधनवसात् फलम्—मूल जौ श्वशुर नाशः सार्पजौ श्वशुर नाशः ज्येष्ठ जौ अग्रज (ज्येष्ठाज्यू) विनाखाजौ अनुज (देवर सालो) नाशः।

मं. द व. उ. बु. १ मा. उ व. न  
 उ. शु. मा. उ. पु. श. व. उ.

| ग. | वा. | ति. | घ. | प.  | न.  | घ. | प.  | यो.   | घ. | प.  | क.  | घ.    | प.     | योगा:   | चन्द्ररा. | दि.   | मा. | सू. | उ. | ता. |   |
|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|-------|----|-----|-----|-------|--------|---------|-----------|-------|-----|-----|----|-----|---|
| १३ | बु. | १४  | ३३ | श.  | २९  | ५५ | शि. | ७     | २० | कि. | १९  | ४४    | मानस   | कुं.    | २८        | १६    | ६   | २१  | २४ |     |   |
| १४ | व.  | २४  | ७  | पु. | ३०  | १५ | सि. | ४३    | ३५ | वा. | १८  | ४४    | मुद्गर | १५।१०   | २८        | २०    | ६   | २०  | २५ |     |   |
| १५ | शु. | ३४  | ५  | उ.  | २९  | ३० | शु. | ५४    | ७  | तै. | १६  | ३७    | ध्वज   | मी.     | २८        | २४    | ६   | १९  | २६ |     |   |
| १६ | श.  | ४४  | ३  | रे  | ३७  | ४३ | शु. | ४८    | ३  | व.  | १३  | २४    | घाता   | २७।४३   | २८        | २८    | ६   | १८  | २७ |     |   |
| १७ | आ.  | ५३  | ७  | अ.  | ७   | व. | ४१  | २१    | व. | ९   | १८  | आनन्द | मे.    | २८      | ३२        | ६     | १८  | २८  | २८ |     |   |
| १८ | सी. | ६३  | ५  | म.  | २१  | ४९ | ऐ.  | ३४    | ९  | कौ. | ४३  | ३५    | चर     | ३५।५२   | २८        | ३६    | ६   | १७  | १  |     |   |
| १९ | मं. | ७   | २६ | १६  | कु. | १८ | ३   | वै.   | २६ | ४०  | म.  | ५३    | १९     | गद      | बु.       | २८    | ४०  | ६   | १६ | २   |   |
| २० | बु. | ८   | २० | २३  | रो. | १३ | ५८  | वि.   | १८ | ५२  | वा. | ४७    | २४     | शुभ     | ४१।५३     | २८    | ४४  | ६   | १५ | ३   |   |
| २१ | वु. | ९   | १४ | २६  | मू. | ९  | ४९  | प्री. | ११ | २   | तै. | ४१    | ३३     | मृत्यु  | मि.       | २८    | ४८  | ६   | १४ | ४   |   |
| २२ | शु. | १०  | ८  | ४०  | आ.  | ५  | ५०  | आ.    | ४३ | ३३  | व.  | ३५    | ५७     | पद्म    | ४८।६      | २८    | ५३  | ६   | १३ | ५   |   |
| २३ | श.  | ११  | १६ | ३३  | पु. | ४३ | १५  | शी.   | ४८ | ५९  | व.  | ३०    | ४८     | छत्र    | क.        | २८    | ५७  | ६   | १३ | ६   |   |
| २४ | आ.  | १३  | ५  | ४१  | २   | अ. | ५६  | ३७    | अ. | ४२  | ३३  | कौ.   | २६     | १६      | वज्र      | ५६।३७ | २९  | २   | ६  | १२  | ७ |
| २५ | सी. | १४  | ५० | ५५  | म.  | ५५ | ७   | सु.   | ३६ | ४९  | ग.  | २२    | ३३     | ध्वाक्ष | मि.       | २९    | ६   | ६   | ११ | ८   |   |
| २६ | मं. | १५  | ४८ | ४३  | प.  | ४४ | ४१  | व.    | ३१ | ५५  | म.  | १९    | ४९     | धम्म    | मि.       | २९    | १०  | ६   | १० | ९   |   |

एवकी गुरुः २८

म. १३।२४३.४१।३३ या.घ. पं. निवृत्तिः २७।४३४

भ. २६।१६ उ. ५३।१९ या. त्रिपुष्करः १८।३ या.

बुधाष्टमीव्रतम्होलीकारंभः, चीरोत्थानम्, धनिष्ठायांd

d बुधः ३२

f मन्वादिः (होली पत्नी)

भ.३।१५ या.आमलकी११ व्रतम, लभिजिति शक्रः१२

भ. ५०।५५ उ. हस्तर्क्षो ३ मौमः ८ कम्भे बधः ०।२१

भ. १९/४९ या. होली १५ पू. व्रतम, रात्री चीरदाहः

---

| गुरुस्थान           | पूज्यस्थान | निर्दिष्ट स्थान |
|---------------------|------------|-----------------|
| सूर्य रा१६।१०।११    | १।२।५।७।९  | ४।८।१२          |
| चन्द्र रा१।५।७।९।११ | १।२।३।४    | ४।८।१२          |
| गुरु रा१।५।७।९।११   | १।३।१०।६   | ४।८।१२          |

सूर्य चन्द्रगुरु जुराउनेतरिका—कर्मगिरि कुमार बर, कन्याको राशिबाट गणना गर्नु पर्छ । कन्यालाई वृहस्पति कुमारलाई व्रतबंधमा वृ-र-सु- जुराउनु । विवाहमा बरलाई वृ-जुराउनु पर्दैन सूर्यजुरे हुन्छ । चन्द्रमा सबैमा जुराउनु पर्छ । ४।१२ परे मा आवश्यक पद विशेष पूजा गौसुवर्णदान गरेर गर्नु बाधापर्दैन ।

| का. | सु. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| ४७  | १०  | ५   | ९   | ६   | ९   | ५  | २   |
| १८  | १७  | २१  | २०  | १८  | ३   | २८ | २६  |
| ग.  | ४   | ३०  | ३९  | ३२  | १८  | ३० | २१  |
| २   | १२  | २७  | ४४  | १२  | ३५  | ५५ | १५  |
| ३४  | ६०  | ५   | ८१  | १   | ४१  | ३  | १३  |
| ४५  | ११  | ३०  | ५२  | १८  | ५७  | १४ | ११  |
| का. | सु. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
| ४८  | १०  | ५   | १०  | ६   | ९   | ५  | २   |
| २५  | २४  | १९  | १८  | ८   | २८  | २५ |     |
| ग.  | ५   | ५४  | ५५  | २२  | ३७  | ८  | ५८  |
| २   | २९  | २१  | २९  | ३५  | ४७  | २७ | ५८  |
| ३५  | ६०  | १२  | ९५  | २   | १४  | ३  | ३३  |
| २   | १८  | ३३  | ४४  | १४  | ५१  | ११ |     |

१३ अ. १०, २५ ब. ११

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | २ | ३ |
| ४ | ५ | ६ |
| ७ | ८ | ९ |

मं.व.उ. ब.मा.उ. व.१६व.उ.

श. मा. उ. प. श. व. उ.



श्रीशके १९०३ श्रीसंवत् २०३८ चैत्र कृष्णपक्षः (चिल्लागा) पा० ह. चि. मू. पूषा. पूमा. उभा. (मार्च ३) उत्तरायणं शिशिरर्तुः-वसन्तर्तुः

| ग.          | वा.  | ति. | घ.    | प. | न. | घ.   | प.  | यो. | घ.  | प.  | क. | घ.      | प.   | योगः | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|-------------|------|-----|-------|----|----|------|-----|-----|-----|-----|----|---------|------|------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| २७ बु.      | १४७  | ४१  | उ.    | ५५ | १९ | शु.  | २७  | ५६  | वा. | १८  | १२ | वर्द्ध  | १५०  | २९   | १५        | ६   | ९   | १०  |    |     |
| २८ वृ.      | २४७  | ५५  | ह.    | ५७ | १५ | ग.   | २४  | ५४  | तै. | १७  | ४८ | रक्ष    | कं.  | २९   | १९        | ६   | ८   | ११  |    |     |
| २९ शु.      | ३४९  | २७  | चि.   | ६० | ०  | वृ.  | २२  | ५१  | व.  | १८  | ४१ | मुसल    | २८५१ | २९   | २३        | ६   | ७   | १२  |    |     |
| प्र. ३० श.  | ४५२  | १२  | चि.   | ०  | २७ | शु.  | २१  | ४९  | व.  | २०  | ४९ | काण     | तु.  | २९   | २७        | ६   | ७   | १३  |    |     |
| १ आ.        | ५५६  | १   | स्वा  | ४४ | ७  | व्या | २१  | ३८  | कौ. | २४  | ६  | लुम्ब   | ५३५० | २९   | ३२        | ६   | ६   | १४  |    |     |
| २ सो.       | ६६०  | ०   | वि.   | १० | ११ | ह.   | २२  | १७  | ग.  | २८  | २२ | मित्र   | वृ.  | २९   | ३६        | ६   | ५   | १५  |    |     |
| प्र. ३१ मं. | ६०   | ४४  | अ.    | १६ | १६ | व.   | २३  | २५  | म.  | ३३  | १९ | वज्र    | वृ.  | २९   | ३९        | ६   | ४   | १६  |    |     |
| ४ बु.       | ७    | ५५  | ज्ये. | २२ | ४९ | सि.  | २४  | ५६  | वा. | ३८  | ३४ | व्याक्ष | २२५९ | २९   | ४३        | ६   | ३   | १७  |    |     |
| ५ वृ.       | ८११  | १४  | मू.   | २९ | २१ | व्य. | २६  | २६  | तै. | ४३  | ४३ | धूम्र   | ध.   | २९   | ४७        | ६   | ३   | १८  |    |     |
| ६ शु.       | ९१६  | १३  | पु.   | ३५ | २७ | व.   | २७  | २९  | व.  | ४८  | २० | वर्द्ध  | ५१४६ | २९   | ५२        | ६   | २   | १९  |    |     |
| ७ श.        | १०२० | २८  | उ.    | ४० | ४४ | प.   | २८  | ०   | व.  | ५२  | ५  | रक्ष    | म.   | २९   | ५६        | ६   | १   | २०  |    |     |
| ८ आ.        | ११२३ | ४३  | श्र.  | ४५ | ५  | शि.  | २७  | ४६  | कौ. | ५४  | ४५ | गद      | म.   | ३०   | ०         | ६   | ०   | २१  |    |     |
| प्र. ९ सो.  | १२२५ | ४८  | घ.    | ४८ | १२ | सि.  | २६  | ३८  | ग.  | ५६  | १२ | शुभ     | १६३८ | ३०   | ४         | ५   | ५९  | २२  |    |     |
| १० मं.      | १३२६ | ३७  | श.    | ५० | २  | सा.  | २४  | २९  | म.  | ५६  | २२ | मृत्यु  | कु.  | ३०   | ८         | ५   | ५८  | २३  |    |     |
| ११ बु.      | १४२६ | ८   | पु.   | ५० | ३९ | शु.  | २१  | २१  | च.  | ५५  | १७ | पद्म    | ३५३० | ३०   | १२        | ५   | ५८  | २४  |    |     |
| १२ वृ.      | ३०   | २४  | २७    | उ. | ५० | १०   | शु. | १७  | १७  | कि. | ५३ | २       | छत्र | मी.  | ३०        | १६  | ५   | ५७  | २५ |     |

a मत्स्येन्द्रनाथ स्नानम्, (नालान्धव) (चर्कयात r  
वसन्तादिस्तेलाभ्याङ्गम् चूतपुष्प प्राशनम् नाला a  
अभिजिन्निवृत्तिः शुक्रः २० b नाला मत्स्येन्द्रयात्रा  
म. १८४१ उ. ४९१२७ या. शतमिषायां बुधः १३b  
r धुलपात श्रवणे शुक्रः १५  
मीनेर्जः २९५८ (चैत्र) संक्रान्तिः पूर्वास्तो बुधः ३४  
c मीने बुधः २१२९  
म. ०४४ उ. ३३११६ या. e योगः २६३७ या.  
अष्टमी व्रतम्, उभायां रविः ५०  
शीतलाष्टमी. (दुदु च्यां च्यां) हस्तर्क्षे २ भीमः १९  
म. ४८२० उ. पूमायां बुधः ५१ d देशोद्धारपूजा  
म. २०१२८ या. मेषे सायनांकः ५७  
पापमोचनी ११ व्रतम् द्वि पृष्करः ४५५ उ. देवपत्तने d  
सोमप्रदोषव्रतम् ध.पं.प्र.१६३८ वारुणीयोगः ४८१२ उ.  
म. २६३७ उ. ५६३२२ या. (पासाचह्ने पूजा) वारुणी e  
पिशाच १४ (पासाचह्ने) धनिष्ठायां शुक्रः ३६  
अश्व (घोड़ा) यात्रा ३०, दर्शश्चादम्, मन्वादिः, c

| ४९  | सू.  | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| चै. | ११   | ५   | १०  | ६   | ९   | ५  | २   |
| २   | ११७  | १२  | १८  | १४  | २७  | २५ |     |
| ग.  | ५३९  | ३२  | २४  | ३३  | ४१  | ३६ |     |
| २   | १४४० | ८   | ३२९ | ४५  | ४१  |    |     |
| ३५  | ५९   | १६  | १०४ | ४५  | ४   | ३  |     |
| २१  | ५२   | ४३  | १६  | ८   | २६  | १६ | ११  |

| ५०  | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| चै. | ११  | ५   | १०  | ६   | ९   | ५  | २   |
| ९   | ८१५ | २४  | १७  | २१  | २७  | २५ |     |
| ग.  | २६  | ५८  | ३१  | ७   | ११  | १४ |     |
| २   | ३८  | १८  | ४४  | ५२  | ५०  | १७ | २९  |
| ३५  | ५९  | २१  | १०९ | ५५  | ७   | ३  |     |
| ४०  | ३८  | ३७  | ११९ | ३१  | ४८  | ११ |     |

|       |         |        |        |
|-------|---------|--------|--------|
| १ सू. | १२.     | १२ बु. | १२     |
| १     | सू. १२  | बु. ११ | शु. १० |
| २     | ३ रा.   | ९ के.  |        |
| ४     | ६ मं.श. | ८      |        |
| ५     | ७ वृ.   |        |        |

अथ चूतपुष्पप्राशन मन्त्रः—चूतमग्नय वसन्तस्य माकन्द कुसुम तव । सचन्दनपिवाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥ चैत्र कृष्ण प्रतिपदामा चीरदाह  
गरेको भस्मधारण गर्ने मंत्र—वंदितासि सुरेन्द्रण ब्रह्मणा शंकरेणच । अतस्त्वां पाहि नो देवि भूते भूतिप्रदा भव ॥ अथ स्त्रीणां गमने दक्षिणसन्मुखशुक्र  
दोषः । सन्मुखे दक्षिणे शुक्रं नो गच्छेत्तु कदाचन । गर्भिणी तु विगर्भास्यान्नबोढा वध्यतामियात् । तत्परिहारः

मं.व.उ, वृ.मा.१श्रः, वृ.व.उ.  
शु.मा.उ.पु.श.व.उ.

25

| प.सं. | स. | मं. | व.  | बु. | शु. | श. | रा. |
|-------|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| १     | ११ | ५   | ११  | ६   | १०  | ५  | २   |
| २     | २१ | ९   | २०  | १६  | ५   | २६ | ४४  |
| ३     | ५४ | ३९  | ५६  | ११  | २२  | ५  | २९  |
| ४     | ५५ | ३९  | १०  | ५३  | ४६  | ३९ | ५१  |
| ५     | ५९ | १०  | ११० | ७   | ५९  | ५  | ३   |
| ६     | ३३ | ५०  | १७  | ५१  | ०   | १९ |     |

मं.व.उ., बु.मा.अ., वृ.व.उ.,  
शु.मा.उ.पू. श.व.उ.

ग्रहोच्चरवाट ग्रहको दान जप गर्नुपर्दा—सूर्यको गहुँ गुड तामो रक्तचन्दन रक्तवस्त्र सुन गौ माणिक दान जप ७००० शिवपूजन । चन्द्रमाको वरापात्र कपूर शंख श्रीखंड इहि चामल मोति चाँदी सेतो गौ दान जप ११००० देवी पूजा । मंगलको—गहुँ गुड समुहो रक्तचन्दन रक्तवस्त्र रातो चरहरा सुन मूगा दान जप १०००० गणेशपूजन । बुधको—मुगी मास ध्यू कस्तुरी हरियो वस्त्र हाती दाँत सुन दान जप ५००० विष्णुपूजन । शनि कुण्डलचतुर्वेदो जनेनफलम्—चतुर्वेदोको प्रथम १० घटी सुमत्यसपदि २० घटीमा भित्तुनाश, ३० सम्म मातुनाश, ४० मा मातुल नाश, ५० घटीसम्ममा बानाश ६० सम्म चतनाश गर्छ, शान्ति गर्नु योग्य छ । चतुर्वेदो को शोग घटी ६० मा घटी बढी भएमा अनुपात गरी ल्याउनु पर्छ ।



| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.  | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगा:  | चन्द्रोदि | म. | सु. | उ. | ता. |    |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|------|----|----|-----|----|----|--------|-----------|----|-----|----|-----|----|
| २७ | गु. | १   | २४ | ४३ | वि.   | १९ | ५९ | ह.   | ३३ | ४५ | तै. | ५६ | ३  | मुशल   | तु.       | ३१ | ९   | ५  | ४४  | ९  |
| २८ | ग.  | २   | २७ | २४ | स्वा  | २४ | ३  | व.   | ३९ | २६ | व.  | ५९ | १६ | सिद्धि | तु.       | ३५ | २३  | ५  | ४३  | १० |
| २९ | आ.  | ३   | ३१ | ८  | वि.   | २९ | १३ | मि.  | २९ | ५६ | व.  | ६० | ०  | उत्पात | १२।५५     | ३१ | २७  | ५  | ४३  | ११ |
| ३० | सो. | ४   | ३५ | ४७ | अ.    | ३५ | ११ | व्य. | ४१ | २  | व.  | ३  | २७ | मानस   | वृ        | ३१ | ३०  | ५  | ४२  | १२ |
| ३१ | मं. | ५   | ४० | ५२ | ज्ये. | ४१ | ३८ | म.   | ४२ | ३१ | कौ. | ८  | १९ | मुद्गर | ४१।३८     | ३१ | ३४  | ५  | ४१  | ३  |
| ३२ | व.  | ६   | ४६ | ५५ | म.    | ४८ | १५ | म.   | ४४ | ७  | ग.  | १३ | २८ | ध्वज   | घ.        | ३१ | ३८  | ५  | ४०  | १४ |

विशालनगरे वज्रवीदेवि यात्रा, ल.पु. श्रीमत्स्येन्द्रनाथ  
म. ५९।१६ उ. भ. पु. श्री भैरवभद्रकाली यात्रा, b  
म. ३१।८ या. (सक्रीयत) c पातनम् नववर्षारम्भः  
bमेवेवुषः २९।१ त्रिपुष्करः २४।३ उ. २७।२४ या.  
अश्विन्यां १ मेघेर्कः ५२।१२ म.पु. विश्वध्वजोत्थानम्  
म. ४६।५ उ. (वैशाख) संक्रान्तिः भ. पु. विश्वध्वज c